केनरा बैंक की
त्रैमासिक
हिंदी गृह पत्रिका

केनरा ज्योति

अंक : 29

जुलाई – सितंबर 2021

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank
A Government of India Undertaking

Together We Can

आज़ादी का अमृत महोत्सव

योगाभ्यास

कोविड टीकाकरण

भाषा और तकनीक

भाषाई एकता

कृषि वित्त

दिनांक 14.09.2021 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित 'हिंदी दिवस समारोह' में 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना 2020-21 (गृह पत्रिकाओं के लिए)' के अंतर्गत 'ग' क्षेत्र हेतु श्री अमित शाह, गृह मंत्री के सानिध्य में श्री नित्यानंद राय, गृह राज्य मंत्री से 'प्रथम पुरस्कार' ग्रहण करते हुए केनरा बैंक के प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एल.वी. प्रभाकर

दिनांक 27.09.2021 को केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय, बेंगलूरू में आयोजित 'हिंदी दिवस समारोह' के अवसर पर उपस्थित गणमान्य

बाएं से दाएं - श्री एच.एम. बसवराज, उमप्र, श्री शंकर एस., मप्र, श्री बृजमोहन शर्मा, कानि, डॉ. एन.एस. सिंह, अवकाश प्राप्त निदेशक, के अ ब्यू, श्री एल.वी. प्रभाकर, प्रनि व मुकाअ, श्री देवाशीष मुखर्जी, कानि, सुश्री ए. मणिमेखलै, कानि और श्री के सत्यनारायण राजू, कानि

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank
A Government of India Undertaking

Together We Can

श्री एल.वी. प्रभाकर
प्रबंध निदेशक
एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

श्री एल.वी.आर. प्रसाद
मुख्य महा प्रबंधक

श्री शंकर एस.
मुख्य महा प्रबंधक

श्री एच.एम. बसवराज
उप महा प्रबंधक

संपादन सहयोग

श्री एन.एस. ओमप्रकाश
श्री बिबिन वर्गीस
श्री डी. बालकृष्ण
सुश्री रीनू मीना
श्रीमती कीर्ति पी.सी.
श्रीमती शिवानी तिवारी
श्रीमती हर्षा के. आर.
श्री पंकज चौरसिया
श्री संजय गौतम
श्री विजय कुमार
श्रीमती आर. वी. रेखा

बिक्री के लिए नहीं

प्रकाशन : केनरा बैंक,
राजभाषा अनुभाग,
मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय
112, जे.सी. रोड,
बेंगलूरु - 560 002
दूरभाष : 080-2223 9075
वेबसाइट :
www.canarabank.com

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

* * *

पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। केनरा बैंक का उनसे सहमत होना ज़रूरी नहीं है।

पृष्ठ संख्या	विषय सूची

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश	2
मुख्य संपादक का संदेश	3
ग्राहक सेवा से जुड़ी बैंकिंग सेवाओं में हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग सुनिश्चित करने के रोचक और सरल उपाय	4
ख्वाबों की सैर	8
कृषि अवसंरचना कोष – बेहतर अर्थव्यवस्था के लिए एक नई शुरुआत	9
बैंकरों के लिए ज़रूरी है, ध्यान	13
कोविड–19 से निपटने के लिए नीतिगत प्रतिक्रिया	18
माँ के महत्व को जानो	21
कोविड – 19 : मेरा अनुभव	22
हिंदी माह : उद्घाटन समारोह की झलकियां	23
प्रधान कार्यालय में हिंदी दिवस समारोह की झलकियां	24
सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार का दौरा	26
स्व–जागरूकता के माध्यम से आत्म विकास	27
म्यूचुअल फंड	30
राजभाषा कार्यान्वयन में अनुवाद की भूमिका	33
माँ के गुज़र जाने पर	36
ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता श्रृंखला :	37
समीक्षा बैठक	39
बोली 'अ' से नहीं 'माँ' से शुरु होती है	40
अंचल समाचार	41
रक्षाबंधन – राखी	48

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

'केनरा ज्योति' के 29वें अंक के साथ आपसे संवाद करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।

सर्वप्रथम, हिंदी माह के महत्वपूर्ण अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से बहुत–बहुत बधाई और अशेष शुभकामनाएँ। सितंबर माह को हमारे बैंक में हिंदी माह के रूप में मनाया जाता है जो निस्संदेह हमारे बैंक द्वारा राजभाषा हिंदी को बैंकिंग कार्यान्वयन के क्षेत्र में लागू करने की दिशा में एक सार्थक और महत्वपूर्ण पहल है।

साथियो, सितंबर तिमाही कई मायनों में हमारे लिये सुकूनदायक रहा। यह हमारे लिए बहुत खुशी की बात है कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना, 2020–21' (गृह पत्रिकाओं के लिए) के अंतर्गत हमारे बैंक की गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' को 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत 'प्रथम पुरस्कार' प्राप्त हुआ जिसे मुझे 14 सितंबर को नई दिल्ली में गृह मंत्री श्री अमित शाह के सानिध्य में गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय के कर कमलों से ग्रहण करने का मौका मिला। यह हमारे लिए गौरव की बात है। इस पत्रिका के विधिवत संचालन के लिए इसकी पूरी टीम, लेखक व सभी पाठक बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने अपने प्रयासों से पत्रिका की निरंतरता को अक्षुण्ण बनाए रखा और उसे उसके मुकाम तक पहुँचाया। मुझे विश्वास है कि आने वाले दिनों में इसमें और भी बेहतरीन बैंकिंग तकनीकी शैक्षणिक व सामाजिक आलेख प्रकाशित होंगे। साथ ही मैं आशा करता हूँ कि आगामी वर्षों में हमें कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' हासिल होगा।

हमारा बैंक वित्तीय मामलों में अब देश का तीसरा सबसे बड़ा बैंक हो गया है। निश्चित तौर पर आप सभी के लगन व ईमानदार प्रयासों से ही यह संभव हो पाया। हमारे बैंक में बचत बैंक खाता खोलने की व्यवस्था को केंद्रीकृत किया गया है। मुझे विश्वास है कि सभी कर्मचारी इस सुविधा का लाभ उठाएंगे। वसूली के क्षेत्र में हमें हिंदी की सहायता से एनपीए घटाने का हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए। आने वाले दिन त्योहार के होंगे जिसमें ग्राहक अपने लिए घर खरीदने, मकान बनवाने, वाहन खरीदने और व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए उधार लेने को उत्सुक होंगे। हमें हमारे बैंक द्वारा इस संबंध में दिए जा रहे आसान ऋण और किश्तों की जानकारी ग्राहकों तक प्रचार के माध्यम से त्वरित गति से पहुँचाना है। यह परोक्ष रूप से हमारे बैंकिंग कारोबार को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा। इसके साथ ही हमारे बेहतरीन कार्य निष्पादन के बदौलत क्रिसिल से भी हमें क्रेडिट रेटिंग में सकारात्मक संशोधन प्राप्त हुआ है। यह सभी हमारे बैंक के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति का उदाहरण है। मैं इन शानदार उपलब्धियों के लिए आप सभी को बधाई देता हूँ।

कोविड–19 द्वारा व्युत्पन्न प्रतिकूल परिस्थितियों में सुरक्षात्मक लिहाज़ से तकनीक ने बैंक कर्मचारियों और ग्राहकों को सुरक्षात्मक माहौल मुहैया कराया। एक तरफ हमारा बैंक मोबाइल और नेट बैंकिंग की राह में तेजी से कार्य कर 'नो–कांटैक्ट' अथवा 'कांटैक्टलेस' बैंकिंग को आसान बना रहा है, दूसरी तरफ ये अपने उत्पादों को हिंदी सहित अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में प्रस्तुत कर उसे उन लोगों के और अधिक नज़दीक लाने की कोशिश कर रहा है। बैंक द्वारा सीबीएस को हिंदी में जारी करना इसी जनानुकूलन का एक उम्दा नज़ीर है। इसके साथ ही बैंक के कर्मचारियों की वेतन पर्ची को अब हिंदी में भी जारी करना संभव हो गया है।

राजभाषा, जो कि सामान्य बैंकिंग से इतर होते हुए भी बैंकिंग क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण अंग है, को अपने बैंक में संपूर्णता से लागू करना हमारा उद्देश्य है। हम इस उद्देश्य के प्रति गंभीर रूप से समर्पित हैं। हम धीरे–धीरे ही सही, इस दिशा में निरंतर अग्रसर हो रहे हैं। मैं अपने समस्त कार्यपालकों से आग्रह करता हूँ कि वे अपने–अपने स्तर पर राजभाषा हिंदी का स्वयं प्रयोग करें और अपने साथियों को भी हिंदी में काम करने हेतु प्रेरित करें।

आइए, आज़ादी का मनाएँ अमृत महोत्सव, राजभाषा का मनाएँ नित्योत्सव ।

असीम शुभकामनाओं सहित,

एल.वी. प्रभाकर
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

मुख्य संपादक का संदेश

प्रिय सथियो,

केनरा ज्योति पत्रिका का यह अंक आपको प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। कारण कि अब इस पत्रिका को वर्ष 2020–21 के प्रकाशनों के लिए प्राप्त 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' ने हमारी और हमारे बैंक परिवार की खुशी में चार चाँद लगा दिया है। केनरा ज्योति पत्रिका में विभिन्न लेखकों, कवि व कवयित्रियों द्वारा प्रकाशित रचनाओं की गरिमा तथा मुखपृष्ठ का चयन, विश्लेषणात्मक प्रस्तुति, डिज़िटल तथा डिज़ाइन इसमें आकर्षक रूप से उभर कर आए, परिणामवश, राजभाषा विभाग द्वारा इसके लिए एक पहचान प्राप्त हुई। यह हमारा और आपका राजभाषा के प्रति समर्पित सेवा मनोभाव का प्रबल उदाहरण है।

भाषा एक बहता नीर है। इसे जिस आकार के बर्तन में डाला जाएगा यह उसी आकार में पेश आती है। एक लेखक अपने अनुभव तथा मस्तिष्क मंथन द्वारा विचारों को शब्दों के मणियों से सिल कर सुंदर माला के रूप में आलेख तैयार करता है। केनरा ज्योति के संपादक मंडल की तरफ से मैं सभी लेखकों को बधाई देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि इस अंक में छपे आलेख भी इसी श्रेणी में गिने जाएंगे और पाठकों को केनरा ज्योति पत्रिका की प्रतीक्षा के लिए मज़बूर कर देंगे।

बैंक देश की वित्तीय धमनियाँ होती हैं और भाषा सांस्कृतिक। भाषा के माध्यम से ही कारोबार व्यापकता प्राप्त करती है। हमारा यह कर्तव्य होना चाहिए कि इन दोनों धमनियों के प्रवाह को सुनिश्चित करते हुए देश की एकता के साथ इसके व्यापार में बढ़ोतरी करें।

प्रस्तुत अंक हमारे इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए बढ़ाया गया एक कदम है। इन्हीं धीरे–धीरे कदमों से आगे बढ़ते हुए निश्चित रूप से एक दिन हम अपनी मंज़िल पर पहुँचने में कामयाब होंगे। पत्रिका में आप कविता, कहानी, लेख व विभिन्न सृजनात्मक लेखन से रू–ब–रू होंगे। मुझे विश्वास है कि आप इस अंक को पसंद करेंगे। आपकी प्रतिक्रियाएँ पत्रिका को गुणात्मक रूप से उत्कृष्ट बनाएगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

एच.एम. बसवराज
उप महा प्रबंधक

ग्राहक सेवा से जुड़ी बैंकिंग सेवाओं में हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग सुनिश्चित करने के रोचक और सरल उपाय

आलेख

भारत में राष्ट्रीयकृत बैंक मूलत: मास बैंकिंग का अंग है। यहाँ पर जनता के व्यापक समूह की सक्रियता सहज ही देखी जा सकती है । सामान्य तौर पर बैंकिंग में अंग्रेज़ी मूल भाषा है लेकिन जनता के लिये बांग्ला, हिन्दी आदि के उपयोग की व्यवस्था है । यह सच है कि हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है पर सच यह भी है कि बैंकिंग में क्षेत्रीय भाषाओं का क्षय हुआ है । बैंकिंग की भाषा समस्या को हमने मानकीकरण के ज़रिये हल करने की कोशिश की है। मानकीकरण से संचार तो हो जाता है लेकिन जातीय और क्षेत्रीय बोली व भाषा का विकास बाधित होता है। जब कोई बोली आदर्श भाषा बनकर मानक भाषा का रूप ले लेती है और बाद में उन्नति कर अपने क्षेत्र में व्यापकता स्थापित कर लेती है तो वह और भी अधिक महत्वपूर्ण बन जाती है और उस भाषा का प्रयोग सार्वजनिक कार्यों में होने लगता है ।

अवनीश कुमार गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक
खुदरा ऋण केंद्र –2, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

किसी भी व्यवसाय का उद्देश्य ग्राहक को अधिकतम संतुष्टि प्रदान करना होता है । इसके साथ–साथ यह जानना ज़रूरी होता है कि संतुष्टि उत्पादों की विविधता या मात्र उसे प्रस्तुत कर देने से नहीं होती है, अपितु उत्पाद के साथ प्रदान की जा रही सेवा के स्तर व व्यावसायिक वातावरण पर भी निर्भर करती है । बैंक उत्पादों से उत्पादन व उपभोग एक साथ होता है । बैंक ग्राहकोन्मुखी उद्यम है, अत: बैंककर्मियों व ग्राहकों के बीच अंतर्संबंधो का विशेष महत्व है जो सेवाओं की गुणवत्ता व ग्राहक संतोष के लिये अति आवश्यक है । यही कारण है कि ग्राहक सेवा की अवधारणा को मानकीकृत नहीं किया जा सकता । जब तक आपके पास ग्राहकों की अपेक्षाओं के अनुरूप उत्पाद नहीं हैं, तब तक लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होना समझदारी नहीं हैं। आजकल ग्राहक सेवा, ग्राहक उन्मुख, ग्राहक मित्र, ग्राहक संतुष्टि एवं ग्राहक रूचिकर जैसे शब्द बैंकिंग उद्योग में प्रमुख है। यहाँ डार्विन का सिद्धांत – Survival of the fittest लागू होता है अर्थात् जो सर्वश्रेष्ठ है वही रहेगा ।

हिन्दी के द्वारा बैंकों में ग्राहक सेवा को बढ़ावा:–

बैंकों में ग्राहक सेवा की गुणवत्ता का निर्धारण करने के लिये हमें हिन्दी को ही आत्मसात करना होगा। हमें ग्राहक का चश्मा पहनकर उसको होने वाली असुविधा के बारे में सोचना होगा । हिंदुस्तान में हिंदी भाषा समस्त भारतीयों को जोड़ने वाली भाषा है । हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसमें यह जादू है कि वह सभी भाषाओं के लोगों की समझ में आ जाती है । हिन्दी एक प्राणवान भाषा है, वास्तव में हमें इसकी अलख जगाना है । जब तक हिन्दी को रोज़गार से नहीं जोड़ा जायेगा तब तक हिन्दी का विकास संभव नहीं है ।

हिन्दी ही देश को एकता के सूत्र में बाँधे रख सकती है, आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी मानसिकता को हिन्दी से जोड़ें तथा विद्वतापूर्ण हिन्दी लिखने का मोह त्यागकर जैसी और जितनी भी हिन्दी जानते हैं उसका प्रयोग शुरु कर दें । यह एक चुनौतीपूर्ण आदर्श है जो हमें प्राप्त करना है । हिन्दी को जनभाषा का रूप देना चाहिये क्योंकि जो भाषा जनभाषा नहीं रहती वह अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सकती । हिन्दी सभी भाषाओं की ध्वनियों का उच्चारण करने की क्षमता रखती है । हिन्दी में जो लिखा जाता है वही पढ़ा जाता है इसलिये हमें ग्राहक सेवा से जुड़ी बैंकिंग सेवाओं में हिन्दी का ही प्रयोग करना चाहिये । देश के कुछ विशेष हिस्सों जैसे दक्षिण भारत या पूर्वी भारत में हिन्दी का प्रचलन कुछ कम है। अत: हमें बैंकिंग सेवाओं में क्षेत्रीय भाषाओं को भी आत्मसात करना होगा और यह राजभाषा संकल्प 1968 और अनुच्छेद 351 के उद्देश्यों के अनुरूप है । हालांकि उन क्षेत्रों में प्रभाव तो हिन्दी का भी पड़ेगा लेकिन ग्राहक सेवा देने के लिये क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग चमत्कारी सिद्ध होगा ।

हिन्दी हमारी राजभाषा और राष्ट्रीय गौरव है । हिन्दी भाषा को हमारे संविधान में राजभाषा का स्थान दिया गया है । भारत देश में

अनेक प्रकार की बोलियाँ और क्षेत्रीय भाषाएँ प्रचलित हैं परंतु हिन्दी भाषा की श्रेष्ठता और उपयोगिता सर्वविदित है। हिन्दी भाषा को एक सभ्य, सुसंस्कृत और परिमार्जित भाषा के रूप में जाना जाता है। किसी भी व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व का मूल्यांकन उसकी सुसभ्य भाषा के द्वारा ही किया जा सकता है। अपने विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने का एकमात्र साधन यह भाषा ही है। अपनी भाषा का विकास करने से हमारा, हमारे समाज का व राष्ट्र का विकास हो सकता है।

वैश्वीकरण के फलस्वरूप हिन्दी का एक और रूप बल पकड़ रहा है। यह वह हिन्दी है, जिसमें अंग्रेज़ी शब्दों के हिन्दी रूप प्रयुक्त होते हैं। ऐसे शब्दों के प्रयोग का श्री गणेश बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में हुआ है। जनता में ही नहीं बल्कि संचार माध्यमों और शासकीय कार्यालयों में भी अंग्रेज़ी शब्दों के बहुवचनी हिन्दी अर्थात् इंग्लिश रूपों का बेझिझक प्रयोग हो रहा है। आजकल अफसरों, अस्पतालों, होटलों, टेबलों, स्कूलों, प्रोफेसरों आदि हजारों शब्दों का निर्विघ्न प्रयोग हो रहा है, जिसके माध्यम से संप्रेषण अधिक सहजता से हो जाता है। यह सारे न तो हिन्दी के हैं और न ही अंग्रेज़ी के, परंतु वैश्वीकरण के फलस्वरूप हिन्दी ने इनको आत्मसात कर लिया है। आज हर भारतवासी का यह कर्तव्य है कि वह राष्ट्रभाषा हिन्दी का सम्मान करे और हिन्दी को सम्मानित दृष्टिकोण प्रदान करे, जिससे हमारा और हमारे देश का कल्याण हो सके। हिन्दी हमारा गौरव है, तभी तो हम कहते हैं – 'हिन्दी हैं हम वतन है, हिंदोस्तान हमारा।'

ग्राहक सेवा – सकारात्मक सोच :–

हिन्दी के द्वारा बैंकों में ग्राहक सेवा को बढ़ावा देने के लिये हमें अपने उद्देश्य में परिवर्तन लाना होगा। हमें बैंकों में निम्न् सोच के आधार पर कार्य करना होगा :–

(क) हमारे ग्राहक हमारे द्वारा मौखिक रूप से व्यक्त विचारों को समझकर ग्रहण कर सकें।

(ख) हमारे ग्राहक भी अपने विचारों को मौखिक रूप से हिन्दी में या क्षेत्रीय भाषा में सुचारु रूप से व्यक्त कर सकें।

(ग) हमारे ग्राहक हिन्दी में या क्षेत्रीय भाषा में ही लिखे गये विचारों को समझकर भली–भांति ग्रहण कर सकें।

(घ) हमारे ग्राहक अपने भावों को भी लिखित रूप से हिन्दी में या क्षेत्रीय भाषा में सुगमता से व्यक्त कर सकें।

(ङ) हमारे सभी ग्राहकों में इतनी क्षमता आ जाये कि वे अपना व्यक्तिगत पत्र व्यवहार तथा अन्य कामकाज हिन्दी में या क्षेत्रीय भाषा में कर सके।

किसी भी भाषा को सरलता से सीखने के लिये यह आवश्यक है कि कम से कम कुछ ऐसे शब्दों को चुन लिया जाये जो भाषा सीखने में सहायक हो। यह महसूस किया गया है कि हिन्दी का अच्छा खासा ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों के मन में हिन्दी में कार्य करने के लिये संकोच की भावना रहती है। यह भी देखा गया है कि जो कर्मचारी हिन्दी मे कार्य करते हैं उन्हें अपने सहयोगियों से अपेक्षित प्रोत्साहन नहीं मिल पाता। निष्कर्ष यह निकलता है कि बैंकों में हिन्दी के प्रयोग की गति धीमी पड़ जाती है।

बैंकों में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को गति प्रदान करने के लिये यह नितांत आवश्यक है कि बैंकों के सभी कर्मचारियों को अधिक से अधिक हिन्दी प्रशिक्षण दिया जाये। यह इसलिये जरूरी है कि हिन्दी में काम करने से पहले हिन्दी ज्ञान अर्जित करना अत्यंत आवश्यक है।

हिन्दी माध्यम से बैंकिंग प्रशिक्षण :–

सामान्यतया प्रशिक्षण तीन महत्वपूर्ण मुद्दों पर आधारित होता है :

1. प्रशिक्षणार्थी
2. विषयसामग्री
3. प्रशिक्षक

4. उपर्युक्त तीनों के बेहतर तालमेल से ही प्रशिक्षण अपने लक्ष्य तक पहुँचता है । सामान्य तौर पर बैंकों में प्रशिक्षण का माध्यम अंग्रेजी रहा है लेकिन पिछले कुछ दिनों से हिन्दी को माध्यम के रूप में अपनाने के लिये विभिन्न स्तरों पर आवश्यक प्रयत्न किये जा रहें हैं । इसके साथ प्रशिक्षण के दौरान क्षेत्रीय भाषा में संवाद से प्रशिक्षण में चार चांद लग सकता है । प्रशिक्षणार्थी की सामग्री को ग्रहण करने की शक्ति बढ़ जायेगी । बैंकों में प्रशिक्षण के दौरान तकनीकी शब्दों के साथ–साथ आम क्षेत्रीय बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिये ।

आवश्यकता पड़ने पर एकाध अंग्रेजी शब्द या वाक्य का सहारा लेकर विषय–वस्तु को और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है । बैंकों में हिन्दी प्रशिक्षण के कार्यक्रम में प्रतिभागियों का खुला सहभाग ही मुख्य बात है । हाँ ये भी अक्सर देखने में आया है कि प्रशिक्षण के दौरान गैर हिन्दी भाषी अधिकारी या कर्मचारी अपने आपको अपेक्षाकृत कम शामिल कर पाते हैं । इससे बचने के लिये क्षेत्रीय भाषा के अच्छे जानकार को प्रशिक्षक के रूप में नियुक्त किया जा सकता है ताकि सभी की सहभागिता बराबर हो ।

बैंकों में ग्राहक सेवा को बढ़ावा देने के लिये बैंकिंग प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक तो अवधि कम होती है दूसरे कुछ बैंक कर्मचारी भी प्रशिक्षण को गंभीरता से नहीं लेते । हिन्दी के माध्यम से बैंकों में ग्राहक सेवा में यदि सुधार लाना है तो हमें बैंकों में प्रयुक्त हिन्दी की आधारभूत शब्दावली को जानना होगा । आधारभूत शब्दावली में अंतराष्ट्रीय शब्दों को यथासंभव उनके प्रचलित अंग्रेजी रूपो में ही अपनाना चाहिये । बैंक, नोट, वाउचर, टिकट, कम्पनी, सीमेंट, पेंशन, लॉकर, ट्रैक्टर आदि शब्द बहुसंख्यक लोगों द्वारा समझे और प्रयोग किये जाते हैं । अत: इन अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी पर्यायों की तलाश न करके मौजूदा स्थिति में इन्हें हू–ब–हू ग्रहण कर लिया जाये ।

ग्राहक सेवा और क्षेत्रीय भाषा :–

प्रयोगात्मक पहलू :– बैंक उत्पादों का विपणन करने के लिये कॉर्पोरेट सेक्टर में मुनाफा दिलाने वाली भाषा के रूप में हिन्दी या किसी भी क्षेत्रीय भाषा को ही अपनाना चाहिये क्योंकि सेवादायी संस्थानो के लिये तो भाषा ही सेवाओ के विपणन मे अधिक उपयोगी होती हैं । प्रोडक्ट या उत्पाद की तरह सेवा को शोरूम मे प्रदर्शित नही किया जा सकता । भाषा ही सेवाओं की गुणवत्ता का बखान करते हुए उनकी खूबियों को जनसामान्य तक पहुंचाकर संस्थान के लाभार्जन का दायरा बढ़ाने में सहायक बनती है ।

जो संस्थान ग्राहकों की अपेक्षा के अनुरूप सेवा देता है वह लाभ कमाता है तथा जो संस्थान ग्राहकों को उनकी अपेक्षा से भी बढ़कर सेवा प्रदान करता है वह सर्वोत्तम लाभ कमाने के साथ साथ प्रतिष्ठित भी बन जाता है । अब सर्वत्र बैंकिंग, सदैव बैंकिंग का जमाना आ गया है। संपर्क बैंकिंग विपणन सरंचना का महत्वपूर्ण पहलू है ।

बहुत से लोग इस बात पर गर्व करते हैं कि वर्षों से अंग्रेजी के अभ्यास के कारण वे हिन्दी में पत्र नहीं लिखते। देखा गया है कि ऐसे ही लोगों की मेजों की दराजों में बड़ी मात्रा में पत्र, जिनमे ग्राहकों की ही अधिकतर छोटी–छोटी सूचनाओं की मांग होती है, महीनों तक लंबित पड़े रहते हैं । कारण केवल इतना है कि अंग्रेजी अच्छी लिख नहीं सकते और हिन्दी या क्षेत्रीय भाषा का अभ्यास नहीं । यदि थोड़ा सा प्रयास करके हिन्दी या क्षेत्रीय भाषा में पत्र लिखना शुरू कर दें तो कोई कारण नहीं कि उनके दराजों में इतने पत्र लंबित पड़े रहें ।

इसी संदर्भ में एक और तथ्य भी सामने आया है कि पहले अधिकतर पत्रों के उत्तर केवल शाखा प्रबन्धक या कुछ ही अधिकारी जिनका अंग्रेजी में अच्छा ज्ञान था, दिया करते थे । जब से हिन्दी में पत्राचार शुरू किया गया है, न केवल सभी अधिकारी बल्कि कर्मचारियों ने भी पत्रों के उत्तर देना शुरू कर दिया है । कई बार तो यह भी देखने में आया है कि पत्र को टंकण की बजाय हाथ से ही लिख कर भेज दिया जाता है । इससे न केवल ग्राहक सेवा में गुणात्मक सुधार आया है बल्कि आत्मसंतोष भी बढ़ा है ।

हिन्दी में कार्य को बढ़ावा देने के लिए अंग्रेजी–हिन्दी शब्दकोश उपलब्ध है । लोगों/ ग्राहकों की सुविधा के लिए अंग्रेजी के कई प्रचलित शब्दों को ज्यों–का–त्यों ले लिया गया है। यहाँ तक छूट दे दी गई है कि यदि किसी तकनीकी शब्दावली के अनुवाद में समस्या हो रही है तो उसे ज्यों–का–त्यों देवनागरी में लिख लें । इस तरह की छूट और कोई भाषा नही देती । इसके बावजूद भी यदि हम बैंकों में हिन्दी या क्षेत्रीय भाषा का सहारा लेकर ग्राहक सेवा में बढ़ोतरी नही कर सकते तो यह केवल हमारी मानसिक दुर्बलता है जो केवल अभ्यास से ही जाएगी । हमें हमेशा यह देखना चाहिए कि अपनी भाषा का कोई विकल्प नहीं होता ।

हिन्दी के माध्यम से बैंकों में ग्राहक सेवा में वृद्धि हेतु हिन्दी में कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के विकास को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। बैंकों में यूनिकोड एवं स्क्रिप्ट मैजिक का अधिक से अधिक प्रयोग करने का प्रयास किया जाना चाहिए। कंप्यूटर में वेबसाइट पर हर विषय की सूचना हिन्दी में ही उपलब्ध होनी चाहिए ताकि अधिक से अधिक ग्राहक लाभान्वित हो सकें। कंप्यूटर सॉफ्टवेयर का मानकीकरण किया जाए, ताकि वैबसाइट में संचित प्रत्येक कार्यक्रम का व्यापक प्रयोग हो सके।

हमे बैंकों में ग्राहक सेवा प्रदान करने के लिए हिन्दी या क्षेत्रीय भाषा को ही तरजीह देनी चाहिए चाहे यह भाषा अविकसित ही क्यों न हो क्योंकि विदेशी भाषा का प्रयोग दासता का द्योतक होता है। पुरुषोत्तम दास टंडन का कहना था कि राष्ट्र की समग्रता को अभिव्यक्ति देने में हिन्दी ही एक समर्थ भाषा है। ग्राहक सेवा प्रदान करते हुए हिन्दी या क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग करने के लिए हमें मन में जिद ठान लेनी चाहिए जैसे तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह की जिद पर पहली बार देश के राष्ट्रपति भवन में हिन्दी अखबार आना शुरू हुआ।

हमारे बैंकों में कार्यकारी अध्यक्ष अथवा हिन्दी अधिकारी को प्रोत्साहित नहीं किया जाता और उसे उचित साधन भी उपलब्ध नहीं कराये जाते। उसका व्यय करने का दायरा भी अत्यंत सीमित रखा जाता है जिससे वह अपने मन के अनुरूप चाहते हुए भी कार्य नहीं कर पाता। आज हमारे बैंकों में यह जोर दिया जाता है कि कार्यालयों की स्टेशनरी, फार्म, बोर्ड आदि द्विभाषी होने चाहिए। हम हिंदुस्तान में रह रहे हैं, हिन्दी का सम्मान करते हुए ये प्रयास करें कि स्टेशनरी तथा फार्म, बोर्ड आदि द्विभाषी भी क्यों हों? ये केवल राजभाषा हिन्दी में ही होने चाहिए।

ग्राहक सेवा को लोकप्रिय बनाने के रोचक और सरल उपाय

अगर स्टाफ एवं प्रबंधक ग्राहकोन्मुखी हैं तो ग्राहक से मिलने पर मुस्कराकर बातचीत करेंगे – उनके व्यक्तिगत संपर्क में रहेंगे और उनके सुख–दुःख में सम्मिलित होंगे। उस आत्मीयता से शाखा को पब्लिसिटी मिलती है तथा ये संवेदनाएं इतनी गहरी तथा तेज होती हैं कि शीघ्र ही शाखा का नाम और बैंक का नाम व्यापक रूप से लोकप्रिय हो जाता है तथा ग्राहकों की संख्या भी बढ़ती जाती है।

ग्राहक सेवा व बैंक कर्मियों की भूमिका की चर्चा – रिलेशनशिप बैंकिंग का सिद्धांत पूर्णतः मानवीय संवेदनाओं पर

आधारित होता है। बदलते बैंकिंग परिवेश में बैंक कर्मियों के लिए यह आवश्यक है कि वे बैंकिंग सेवा में आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी अपनाएँ एवं उत्कृष्ट ग्राहक सेवा प्रदान करें जिससे बैंक से नए ग्राहक जुड़ें। बैंक कर्मियों को अपनी सोच एवं व्यवहार में वर्तमान परिवेश के अनुसार निम्नलिखित दिशा में परिवर्तन लाना होगा –

(क) ग्राहक से विचार–विमर्श के समय व्यवहार में व्यावसायिकता लाएँ।

(ख) ग्राहक की संतुष्टि को सर्वोच्च स्थान दें।

आज के बदलते परिवेश में कर्मचारियों की कुशलता में इस तरह की वृद्धि करनी होगी कि वे उच्च तकनीक को प्रयोग में लाकर कामकाज कर सकें तथा नए कारोबार परिवेश में अपने को ढाल सकें। इसके साथ–साथ उन्हें अपने कार्य में चुस्ती भी लानी होगी।

हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि ग्राहकों को आदर देना बैंक का आदर है। यह प्रायोगिक सच है कि एक संतुष्ट ग्राहक चार अन्य ग्राहकों को बैंक से जोड़ता है जबकि एक असंतुष्ट ग्राहक चार वर्तमान ग्राहकों को बैंक छोड़ने को बाध्य करता है। आज जिन बैंकों में अपने आपको त्वरित गति से बदलने का साहस है, बस वे ही बैंक अपना स्थान बनाए रख पाएंगे। क्योंकि आज का नारा है – 'सुदृढ़ बनो या विलुप्त हो जाओ।'

- ग्राहक सेवा को अधिक कारगर बनाने के लिए होर्डिंग, बैनर, बोर्ड, बस, पैनल, पोस्टर आदि द्वारा जानकारी दी जानी चाहिए। प्रदर्शनी, मेलों में अधिकाधिक भाग लेकर बैंक की विविध योजनाओं की जानकारी देनी चाहिए।

- गांवों में जाकर विलेज प्रोफ़ाइल तैयार की जा सकती है तथा उनके अनुसार अपनी सेवाओं को तैयार किया जा सकता है।
- सिनेमा हाल में सिनेमा स्लाइड, केबल टीवी पर योजनाओं के प्रचार–प्रसार विषयक जानकारी से जनता को अवगत कराया जा सकता है।
- सर्वश्रेष्ठ शाखा पुरस्कार योजना द्वारा भी बैंकों में व शाखाओं में भी प्रतिस्पर्धा का वातावरण बनाया जा सकता है।
- राजभाषा हिन्दी अपनाकर जनसामान्य को अपनी भाषा में रिटेल बैंकिंग द्वारा प्रदत्त जमा/ ऋण सेवाएँ समझाई जा सकती हैं और इसे सच्चे अर्थों में जन–जन की बैंकिंग बनाया जा सकता है।

बैंकों में अगर संतोषजनक ग्राहक सेवाएँ नहीं होगी तो ग्राहक नहीं, तो व्यापार नहीं और व्यापार नहीं तो लाभ नहीं, लाभ नहीं तो अच्छा वेतन एवं सेवा लाभ नहीं। यह सब नहीं तो बैंक चलाना मुश्किल होगा। सरकार द्वारा अप्रत्यक्ष चुनौती और चेतावनी भी दी जा चुकी है कि संभल जाओ। अत: ग्राहक सेवा या संतुष्टि किसी भी बैंकिंग सेवा या व्यवसाय हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अंत में हिन्दी गौरव के लिए कुछ पंक्तियों के साथ निबंध की लेखनी को विराम देता हूँ :–

"हम हैं भारतवासी हिन्दी भाषा हमको प्यारी
इसके प्रति गर्व हमें है यही पहचान हमारी
संतों और भक्तों की वाणी हम इसके बलिहारी
भारत की हर इक भाषा इसकी बहन दुलारी
आओ महकाएँ हिन्दी से हर शाखा में फुलवारी
अपनी भाषा को अपना लो भारत के नर नारी।"

कविता

ख्वाबों की सैर

चलो ख्वाबों को सैर पर ले जाते हैं,
इंद्रधनुषी संसारों के दर्शन कराते हैं।
कुछ छोटे–बड़े से, कुछ आधे–अधूरे से,
कुछ सुर्ख नए, कुछ बेहद पुराने से।
इन्हें पूरा करने का यक़ीन दिलाते हैं,
चलो ख्वाबों को सैर पर ले जाते हैं।

एक कतरा सा ख्वाब छिटका पड़ा है,
ज़िम्मेदारियों की लहरों में उलझा हुआ, डूबा हुआ।
इसे फिर आंखों में पिरो कर एक दरिया बनाते हैं,
चलो ख्वाबों को सैर पे ले जाते हैं।

ये ख्वाब ही तो है, जो तुम्हें जिंदा रखते हैं,
ये ख्वाब ही तो है जो हौसलों के काम करते हैं।
इस भागती, दौड़ती, ज़िंदगी में,
जब मन थक कर बैठ जाता है।
ये ख्वाब ही तो हैं, जो उत्साह भरते हैं,
इस ख्वाबों को जोड़ एक आशियाँ बनाते हैं।
चलो ख्वाबों को सैर पर ले जाते हैं।

स्वाती झा
अधिकारी
रामप्रस्थ शाखा, गाज़ियाबाद

कृषि अवसंरचना कोष
बेहतर अर्थव्यवस्था के लिए एक नई शुरुआत

आलेख

कृषि–बुनियादी ढांचा: भारतीय खेती का आधार बिन्दु

कृषि विकास की गति को तेज करने के लिए कृषि अवसंरचना एक अनिवार्य शर्त है क्योंकि इसका सीधा संबंध किसानों की बैंक ऋण तक पहुंच, फसल उत्पादन बढ़ाने और बाजारों तक बेहतर पहुंच से है, इस प्रकार कृषि में विकास को बढ़ावा मिलता है। भारतीय अर्थव्यवस्था के खून के रूप में कृषि के लिए, कृषि बुनियादी ढांचा इसकी धमनियों और नसों के रूप में कार्य करता है, जो कृषि क्षेत्र, सतत अर्थव्यवस्था और राष्ट्र के समग्र विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

यह अनुमान लगाया गया है कि बुनियादी ढांचे में एक प्रतिशत की वृद्धि किसी देश के सकल घरेलू उत्पाद में एक प्रतिशत की वृद्धि के साथ जुड़ी हुई है। हालांकि, कृषि बुनियादी ढांचे के लिए भारी प्रारंभिक निवेश, उच्च वृद्धिशील पूंजी–उत्पादन अनुपात, लंबी विकास अवधि और उच्च जोखिम की मांग होती है।

शशि कान्त पाण्डेय
प्रबंधक–राजभाषा
क्षेत्रीय कार्यालय –1, कानपुर

भारतीय कृषि की स्थिति :

नाबार्ड 2019–20 की वार्षिक रिपोर्ट में आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, कृषि और संबद्ध गतिविधियों में सकल मूल्य वर्धित (जीवीए) में वृद्धि वर्ष 2016–17 में 6.3 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2019–20 में 4 प्रतिशत हो गई थी। उत्पादकता बढ़ाने, आय के स्तर को बढ़ाने और ग्रामीण इलाकों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए कृषि और संबद्ध गतिविधियों में पूंजी निर्माण अत्यंत आवश्यक है।

कृषि के लिए सकल पूंजी निर्माण जीवीए वर्ष 2011–12 में 18.2 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2017–18 में 13.7 प्रतिशत हो गया। जीवीए के हिस्से के रूप में कृषि क्षेत्र में सकल पूंजी निर्माण वर्ष 2018–19 में घटकर 16.3 प्रतिशत हो गया, जो वर्ष 2013–14 में 17.7 प्रतिशत था।

कृषि और संबद्ध क्षेत्र के तहत कुल सकल पूंजी निर्माण में निजी क्षेत्र की हिस्सेदारी 2013–14 में 88.1 प्रतिशत से घटकर 2016–17 में 82.7 प्रतिशत हो गई, जबकि इसी अवधि के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र का निवेश 11.9 प्रतिशत से बढ़कर 17.3 प्रतिशत हो गया। एक तरफ, जीवीए में सेवा क्षेत्र का योगदान बढ़ा है; औद्योगिक क्षेत्र की हिस्सेदारी स्थिर रही। दूसरी ओर, कृषि क्षेत्र में भारी गिरावट आई है।

बिंदु जिन्हें जोड़ना अभी बाकी है–

एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था के रूप में, अभी भी देश में बुनियादी ढांचा अविकसित परिस्थितियों में है और फिर भी, लचीले भारतीय कृषि की एक बड़ी तस्वीर बनाने के लिए कई बिंदु अभी तक नहीं जुड़े हैं।

1. प्यासा कृषि क्षेत्र : देश के अधिकांश किसान अभी भी सिंचाई के स्रोत के रूप में वर्षा जल पर निर्भर हैं। वर्षा आधारित कृषि देश के कुल बोए गए क्षेत्र का लगभग 51 प्रतिशत है और कुल खाद्य उत्पादन का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा है। लेकिन मानसून बहुत अनिश्चित होता है, जिससे फसल को भारी नुकसान होता है। किसान की आय दोगुनी करने के लिए सिंचाई में निवेश सबसे बड़ी आवश्यकता है। भारतीय कृषि क्षेत्रों की प्यास बुझाने के लिए कुछ पहल की गई, जैसे 'प्रधानमंत्री किसान सिंचाई योजना।'

लघु सिंचाई को बढ़ावा देने के लिए 'हर एक खेत को पानी', प्रत्येक खेत को सिंचाई का पानी उपलब्ध कराने की नीति : सिंचाई के बेहतर और कुशल उपयोग के लिए, 'प्रति बूंद, अधिक फसल' पहल द्वारा फसलों के लिए पानी का ध्यान रखा गया था। लेकिन फिर

भी, भारतीय कृषि का बड़ा हिस्सा अभी भी उचित बुनियादी ढांचे की कमी के कारण प्यासा है।

2. सड़कें : कृषि समृद्धि के लिए खेत और बाजार के बीच संपर्क एक महत्वपूर्ण कारक है। किसान चाहते हैं कि अच्छी तरह से विकसित सड़कें कृषि आदानों को उनके खेतों तक ले जाएं और अपनी फसल को बेचने के लिए बाजारों में ले जाएं। एक अच्छी पहल है 'प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना।' कनेक्टिविटी बढ़ने से रोज़गार के अवसर और आय का सृजन भी होगा, लेकिन प्रमुख बाधाएं भूमि अधिग्रहण, कानूनी मुद्दे, श्रम और कच्चे माल की कमी हैं।

3. गोदाम और ग्रामीण गोदाम : एक किसान के लिए सबसे कठिन स्थिति, खराब होने के डर से अपनी फसल की उपज को कम कीमत पर बेचने की होती है क्योंकि भंडारण की सुविधा नहीं होती है। अनुचित भंडारण सुविधाओं के कारण, भोजन की बर्बादी होती है, जो विश्व की एक तिहाई आबादी को खिला सकती है, जैसा कि विश्व बैंक की एक रिपोर्ट में बताया गया है। उचित भंडारण व्यवस्था न केवल कृषि–वस्तुओं के जीवन में सुधार करती है बल्कि कीटों के संक्रमण और जल्दी सड़न को भी रोकती है। लेकिन फिर भी, निवेश करने के लिए बहुत कुछ है क्योंकि कोल्ड चेन और भंडारण के बुनियादी ढांचे की कमी के कारण, भारत अपनी कुल कृषि उपज का 16 प्रतिशत तक सड़ने और खराब होने के कारण बर्बाद कर देता है।

अतीत में सरकार की पहल :

केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय ने प्रधानमंत्री कृषि संपदा योजना (पीएमकेएसवाई), फलों, सब्जियों और दूध उत्पादों के लिए एकीकृत कोल्ड चेन, मेगा फूड पार्क, खाद्य प्रसंस्करण समूहों के लिए बुनियादी ढांचे, खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों के लिए ₹10 करोड़ तक की सहायता प्रदान की। योजनान्तर्गत निधि आबंटन हेतु पात्र खाद्य सुरक्षा प्रयोगशाला के लिए भारत सरकार ने वर्ष 2016–20 के लिए ₹6000 करोड़ आबंटित किए थे, लेकिन स्वीकृत परियोजनाओं के विवरण का बैंकों द्वारा ठीक से खुलासा नहीं किया गया था।

राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड ने फसल कटाई के बाद के कार्यों से जुड़ी बुनियादी ढांचा परियोजना के लिए भी अनुदान प्रदान किया। इसमें कोल्ड चेन के आधुनिकीकरण और निर्माण के साथ–साथ

बागवानी उत्पादों के लिए गैर–कोल्ड स्टोरेज के लिए पूंजीगत सब्सिडी शामिल है। उत्तर–पूर्वी क्षेत्रों और पहाड़ी राज्यों में सब्सिडी परियोजना लागत का 50 प्रतिशत है, जबकि अन्य राज्यों में यह 35 प्रतिशत है। कृषि मंत्रालय, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत फसल कटाई के बाद की परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता भी देता है।

कृषि अवसंरचना निधि योजना :

भारत के प्रधान मंत्री द्वारा ₹20 लाख करोड़ के 'आत्मनिर्भर भारत' पैकेज के एक हिस्से के रूप में कृषि अवसंरचना निधि योजना शुरू की गई है। यह योजना सामुदायिक कृषि परिसंपत्तियों के लिए फसलोत्तर प्रबंधन बुनियादी ढांचे के लिए और ब्याज अनुदान और वित्तीय सहायता के माध्यम से विभिन्न व्यवहार्य परियोजनाओं में निवेश के लिए मध्यम से लंबी अवधि के ऋण वित्तपोषण की सुविधा के रूप में प्रदान की जाएगी। यह योजना वित्तीय वर्ष 2020 से वित्तीय वर्ष 2029 तक मान्य होगी। सहकारी विपणन समितियों, प्राथमिक कृषि ऋण समितियों, किसान उत्पादक संगठनों, स्वयं सहायता समूहों, व्यक्तिगत किसान, संयुक्त देयता समूह, स्टार्ट–अप आदि को ऋण के रूप में बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों द्वारा ₹1 लाख करोड़ की वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

इस वित्तीय सुविधा के तहत, सभी ऋणों को ₹2 करोड़ के ऋण जोखिम तक प्रति वर्ष 3 प्रतिशत का ब्याज अनुदान मिलेगा। अधिकतम 7 वर्ष की अवधि तक, ब्याज अनुदान उपलब्ध होगा। वर्ष 2020–21 के बीच ₹10,000 करोड़ की ऋण राशि प्रदान की

जाएगी और शेष तीन वर्षों के दौरान हर साल ₹30000 प्रदान किए जाएंगे।

सभी पात्र उधारकर्ताओं के लिए, ₹2 करोड़ तक की ऋण सुविधाओं के लिए सूक्ष्म और लघु उद्यमों के लिए क्रेडिट गारंटी फंड ट्रस्ट (सीजीटीएमएसई) योजना के तहत कृषि अवसंरचना कोष से ऋण गारंटी कवरेज प्रदान किया जाएगा। कृषि अवसंरचना निधि कवरेज के लिए क्रेडिट गारंटी शुल्क भारत सरकार द्वारा वहन किया जाएगा। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति वर्ग के उद्यमियों और महिला लाभार्थियों को प्राथमिकता दी जाएगी। योजना के तहत कुल अनुदान में से 24 प्रतिशत का उपयोग अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उद्यमियों के लिए किया जाएगा, अर्थात् अनुसूचित जाति के लिए 16 प्रतिशत और अनुसूचित जनजाति के लिए 8 प्रतिशत।

कृषि अवसंरचना कोष का प्रबंधन एक ऑनलाइन प्रबंधन सूचना प्रणाली (एमआईएस) द्वारा किया जाएगा। एमआईएस पोर्टल की मदद से सभी पात्र संस्थाएं इस फंड के तहत क्रेडिट सुविधाओं के लिए आवेदन कर सकती हैं। एमआईएस प्लेटफॉर्म कई वित्तीय संस्थानों द्वारा ब्याज दरों की पारदर्शिता, ब्याज अनुदान का विवरण और क्रेडिट गारंटी कवर जैसे लाभ देगा।

क्या कृषि अवसंरचना कोष खेल बदलने वाला सिद्ध होगा?

भारत सरकार ने पहले तीन अध्यादेश जारी किए थे, जो आवश्यक वस्तु अधिनियम में बदलाव पर कृषि बाजार के कानूनी ढांचे से संबंधित थे, जो किसानों को एपीएमसी मंडियों से अपनी उपज बेचने और किसानों, प्रोसेसर और निर्यातकों के बीच कृषि अनुबंधों को बढ़ाने की अनुमति देता है। खुदरा विक्रेताओं को इस क्षेत्र में उदारीकरण लाने के लिए कृषि अवसंरचना कोष स्पष्ट बुनियादी ढांचे के अंतर के समाधान के रूप में कार्य करेगा, जो कि प्रमुख कृषि सुधारों के रूप में भारत की आवश्यकता है।

कृषि अवसंरचना कोष कृषि–उद्यमियों के लिए वित्त का एक निरंतर स्रोत होगा और कृषि में नए युग की तकनीकों जैसे इंटरनेट ऑफ थिंग्स(IoT), कृत्रिम बुद्धिमत्ता(AI), जटिल कोल्ड चेन, एग्री–टेक स्टार्ट–अप का लाभ उठाने में मदद करेगा। और यह आपूर्ति श्रृंखला और मूल्य श्रृंखला प्रबंधन को अधिक दृश्यमान और पारदर्शी भी बनाएगा। यह कृषि के बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए आवश्यक गति भी देगा और भविष्य में सरकार के नीति तंत्र पर निर्भर हुए बिना व्यवस्थित रूप से बाधाओं को दूर करेगा।

कृषि अवसंरचना निधि का सबसे बड़ा लाभ डेटा संग्रह होगा क्योंकि डेटा एक वेब पोर्टल से एकत्र किया जाएगा जिसका रखरखाव कृषि सहकारिता और किसान कल्याण निदेशालय द्वारा किया जाता है। इससे सरकार को पता चल जाएगा कि निवेशक किस प्रोजेक्ट में अपनी दिलचस्पी दिखा रहे हैं। यह देखा गया है कि बैंक उच्च निवल मूल्य वाले उद्यमियों को प्राथमिकता देते हैं। यह वास्तव में एक उपलब्धि होगी यदि किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ), स्वयं सहायता समूह और पीएसी (प्राथमिक कृषि सहकारी समितियां) कृषि अवसंरचना कोष से ऋण प्राप्त कर सकते हैं।

एक कर्ज से प्रेरित मॉडल :

कृषि अवसंरचना कोष योजना के तहत कृषि अवसंरचना परियोजनाओं को बढ़ावा देने वाले उद्यमी को मार्जिन का केवल 10 प्रतिशत निवेश करना होगा जबकि शेष 90 प्रतिशत वित्तीय संस्थानों द्वारा जुटाया जाएगा। सबसे अधिक संभावना है, ऋण का एक बड़ा हिस्सा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा दिया जाएगा, और इसलिए इसे पूंजीगत घाटे वाले देश में सब्सिडी जुटाने के लिए एक अप्रत्यक्ष मार्ग के रूप में बनाया जा सकता है। निजी क्षेत्र के दृष्टिकोण से कृषि अवसंरचना कोष के दिशा–निर्देश बहुत ही आकर्षक रूप से तैयार किए गए हैं।

योजना के तहत संभावित आशंका :

यह उम्मीद की जाती है कि फसल के बाद के कृषि बुनियादी ढांचे से किसानों की स्थिति में सुधार होगा, लेकिन यह स्वीकार करना कठिन है कि छोटे और सीमांत किसान और काश्तकार किसान, जो कुल कृषि उत्पादकों का 90 प्रतिशत हिस्सा हैं, कृषि निवेश से लाभान्वित होंगे। कृषि के साथ सबसे बड़ा मुद्दा बढ़ते खर्च, सूचना विषमता, घरेलू खर्च में वृद्धि और कृषि वस्तुओं की कीमतों में अस्थिरता के कारण लाभकारी कीमतों की कमी है। इसलिए अकेले बुनियादी ढांचे के निर्माण से इन मुद्दों का समाधान नहीं हो सकता है जैसे भंडारण बुनियादी ढांचे की उपलब्धता का मुद्दा होगा।

इसलिए, तब तक बुनियादी ढांचे को अनुदान देना महत्वपूर्ण है, जब तक कि किसानों के लिए उत्पन्न होने वाली सब्सिडी के अन्य प्रकार छोटे उत्पादकों की तुलना में मौजूदा व्यापारियों के लिए उपयोगी नहीं हो सकते हैं। इसलिए, कृषक समुदाय की मदद करने के इरादे के बावजूद, इस तरह की योजना

छोटे उत्पादकों की मदद करने के बजाय मौजूदा या नई औपचारिक कॉर्पोरेट संस्थाओं, जैसे व्यापारियों को लाभ प्रदान कर सकती है।

समाधान की तलाश :

नाबार्ड, एफपीओ बनाते समय और कृषि अवसंरचना कोष के माध्यम से बुनियादी भंडारण, बुनियादी ढांचे का निर्माण करते समय, एक अनिवार्य मॉड्यूल तैयार करना चाहिए, जो एफपीओ को परक्राम्य गोदाम रसीद प्रणाली का उपयोग करने और बाजार के जोखिमों से बचने के लिए कृषि–वायदा की रियासत को नेविगेट करने के लिए प्रशिक्षित करता है। भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई), राज्य व्यापार निगम (एसटीसी) और भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहयोग विपणन संघ (एनएफईडी) जैसे कमोडिटी बाजारों में काम करने वाली सरकारी एजेंसियों को कृषि–वायदा में अपनी भागीदारी को बढ़ावा देना चाहिए।

बैंकों द्वारा विचार किए जाने वाले पात्र लाभार्थी किसान, स्वयं सहायता समूह, कृषि–उद्यमी, कृषि–तकनीक स्टार्ट–अप, प्राथमिक कृषि ऋण समिति, किसान उत्पादक संगठन, संयुक्त देयता समूह, विपणन सहकारी समितियाँ और बहुउद्देशीय सहकारी समितियाँ हैं।

ब्याज सबवेंशन की लागत

कृषि अवसंरचना कोष के तहत ऋण सुविधा पर ₹2 करोड़ की ऋण सुविधा तक प्रति वर्ष 3 प्रतिशत का ब्याज सबवेंशन आकर्षित करेगा। ब्याज अनुदान 7 साल की अधिकतम समयावधि के लिए उपलब्ध होगा। यदि क्रेडिट सुविधा ₹2 करोड़ से अधिक है, तो ब्याज सबवेंशन ₹2 करोड़ तक सीमित रहेगा। यह ऋण सुविधा चार वर्षों में वितरित की जाएगी, पहले वर्ष में ₹10000 करोड़ की मंजूरी के साथ और अगले तीन वित्तीय वर्षों में ₹30000 करोड़ प्रत्येक में। समग्र वित्तपोषण सुविधा से बाहर करने के लिए धन का प्रतिशत और सीमा राष्ट्रीय निगरानी समिति द्वारा तय की जाएगी। इस योजना के तहत चुकौती अवकाश कम से कम 6 महीने से लेकर अधिकतम 2 साल तक भिन्न हो सकता है, जो उस गतिविधि पर निर्भर करता है जिसके लिए राशि का वित्तपोषण किया गया है।

इस क्रेडिट सुविधा के संबंध में सभी पात्र संस्थाओं को एमआईएस प्लेटफॉर्म के माध्यम से आवेदन करना होगा। सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली के माध्यम से बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों को क्रेडिट गारंटी और ब्याज सबवेंशन दिया जाएगा। योजना के लाभार्थियों को ऋण देने वाली संस्थाओं द्वारा धनराशि का वितरण बैंक से जुड़े आधार कार्ड से किया जाएगा।

उपसंहार :

बेहतर और विपुल बुनियादी ढांचा एक भविष्य और मजबूत कृषि–आर्थिक बरगद के पेड़ के लिए अंकुरित बीज की तरह है। एक भारतीय किसान के सभी तीव्र दर्द जैसे भंडारण सुविधाओं की कमी, संकटग्रस्त बाजार मूल्य, सिंचाई सुविधाओं की कमी, कोल्ड चेन की कमी आदि का मूल कारण खराब विकसित या कृषि बुनियादी ढांचा नहीं है। भारत सरकार ने कृषि बुनियादी ढांचे की स्थिति को ऊपर उठाने के लिए अतीत में कई योजनाएं शुरू की थीं, लेकिन उन योजनाओं को सही मायने में लागू करना एक प्रमुख चिंता का विषय था क्योंकि सरकार के पास इन योजनाओं के तहत संस्थागत लेनदारों द्वारा डेटा तक कोई स्पष्ट पहुंच नहीं थी। केवल योजनाओं की शुरुआत, धन के आबंटन से एक जीवंत कृषि बुनियादी ढांचे के विकास पर एक चमत्कारी प्रभाव पड़ेगा।

कृषि अवसंरचना निधि योजना के तहत, जो 'आत्मनिर्भर भारत' कार्यक्रम का एक हिस्सा है, बैंकों द्वारा संस्थागत ऋण के रूप में ₹1 लाख करोड़ का आबंटन होगा, और साथ–साथ, यह योजना डेटाबेस के माध्यम से भी साझा करेगी। एमआईएस पोर्टल, जो ढांचागत ऋण के विभिन्न खंडों के प्रति वित्तीय संस्थानों की रुचि को दर्शाएगा। इससे सरकार को धन के प्रवाह के साथ–साथ देश में कृषि ढांचागत विकास के तहत समग्र प्रगति की निगरानी के बारे में बेहतर जानकारी होगी।

कृषि अवसंरचना कोष जैसे सही वित्तीय साधनों के निर्माण के साथ, रूढ़िवादी औपचारिक वित्तपोषण क्षेत्र भी निवेश करने के इच्छुक होंगे। यह न केवल एक स्थायी, घरेलू पूंजी स्रोत बनाता है, यह एक नए प्रथम विश्व भारत के निर्माण की दिशा में सभी क्षेत्रों के भारतीय निवेशकों से एक सहभागी और प्रतिबद्ध दृष्टिकोण को भी प्रोत्साहित करेगा। इस प्रथम विश्व भारत में, किसानों को कठिनाइयों का सामना करने के आदी होने के बजाय सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में योगदानकर्ता के रूप में देखा जाएगा। भारतीय कृषि में स्थिरता और किसानों की आय बढ़ाने के बढ़ते अवसरों से बैंकों का दबाव भी कम होगा, जिन्हें बार–बार कर्जमाफी का बोझ उठाना पड़ता था।

आलेख

बैंकरों के लिए ज़रूरी है, ध्यान

आज बैंकिंग क्षेत्र ज़बर्दस्त चुनौतियों के दौर से गुज़र रहा है और इन चुनौतियों को झेलते-झेलते बैंकरों की ज़िंदगी अत्यंत तनावग्रस्त होती जा रही है और वे तमाम बीमारियों का शिकार बनते जा रहे हैं। कई असमय काल-कवलित भी हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में योग, प्राणायाम एवं ध्यान की साधना न केवल उन्हें शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से स्वस्थ बनाएगी, अपितु अपने कार्यालयीन कार्यों में सुदक्ष बनाने के साथ-साथ, उत्साह और लगन के साथ निष्पादन के नए मानदंडों को हासिल करने में भी मददगार होगी। इससे उन्हें अपने पारिवारिक एवं कार्यालयीन ज़िम्मेदारियों का बखूबी निर्वाह करने के लिए भी भरपूर मानसिक एवं शारीरिक ऊर्जा की प्राप्ति होगी। इस लेख में हम ध्यान पर चर्चा करेंगे।

डॉ. श्याम किशोर पाण्डेय
सहायक महा प्रबंधक (सेवानिवृत्त)

सर्वप्रथम, मैं योग, वाणी (व्याकरण) एवं आयुर्वेद के ज्ञाता महर्षि पतंजलि को प्रणिपात करता हूँ:

योगेन चित्तस्य पदेन वाचा, मलं शरीरस्य च वैद्यकेन। योऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां, पतंजलिं प्रांजलिरानतोऽस्मि।।

(I offer my salutations with folded hands to Patanjali, the renowned amongst sages, who removed the impurity of mind through yoga, of the speech by grammar and of the body by Ayurveda)

संस्कृत भाषा का ध्यान शब्द अत्यंत व्यापक अर्थों में प्रयुक्त होता है। संस्कृत परंपरा में ध्यान के दो पहलू हैं – धारणा और भावना। धारणा का अर्थ 'एकाग्रता' से है और भावना का अर्थ 'मनन', 'अन्वेषण' और 'विश्लेषण' करने से है। ये दोनों मिलकर 'ध्यान' की अवधारणा को पूर्ण करते हैं, अर्थात् 'समता' और 'विपाशना'। समता जहाँ 'एकाग्रता' है, वहीं 'विपाशना' विश्लेषण है। विश्लेषण और एकाग्रता मिलकर ही 'ध्यान' की अवधारणा को परिपूर्ण करते हैं। ध्यान के संदर्भ में महर्षि पतंजलि द्वारा दी गई योग की इस परिभाषा को स्मरण में रखना आवश्यक है – 'योगस्तु चित्तवृत्ति निरोध:' यह परिभाषा ध्यान की महत्वपूर्ण स्थिति को स्पष्ट करती है। महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग की बात कही है, जिसके अंतर्गत यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि आते हैं, यानी समाधि की स्थिति में पहुँचने के लिए ध्यान अंतिम सोपान है। ध्यान को यदि योग का प्राण कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। ध्यान के माध्यम से ही हम स्वयं को जान सकते हैं। ध्यान करने के लिए किसी विशेष मुद्रा या आसन की भी आवश्यकता नहीं है, पद्मासन, बद्ध पद्मासन, वीरासन, सुखासन या अन्य कोई भी आसन या बैठने की मुद्रा जो सुविधाजनक हो, उसे अपनाया जा सकता है। ध्यान जितना कहने में आसान है, उतना करने में नहीं होता। हम ज्योंही ध्यान लगाते हैं, मन में तरह-तरह के विचार आने लगते हैं। जिन विचारों के बारे में हम सोचते भी नहीं, वे ऊटपटांग विचार भी पता नहीं कहाँ-कहाँ से अनायास ही आने लगते हैं और मस्तिष्क में हलचल मचा देते हैं। इसे ही ध्यान में रखते हुए अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण से श्रीमद्भागवत गीता में प्रश्न किया है और कहा है कि:

चंचलं हि मन: कृष्ण प्रमाथि बलवद् दृढ़म्। तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।।

(For, Krishna, the mind is very unsteady, turbulent, tenacious and powerful; therefore, I consider it is difficult to control as the wind)

भगवान श्री कृष्ण ने इसके प्रत्युत्तर में योग और ध्यान के द्वारा मन को साधने की बात कही है :

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्। अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।

(The mind is without doubt unsteady and difficult to curb, Arjuna; but it can be controlled through practice (of Meditation) and dispassion, O son of Kunti).

असंयतात्मनायोगो दुष्प्राप इति मे मतिः ।
वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः ।।

(Yoga is difficult of achievement for one whose mind is not subdued; by him, however, who has the mind under control, and is ceaselessly striving, it can be easily attained through practice; such is My conviction.)

इस संबंध में साधकों का विचार है कि ध्यान करते समय यदि निम्नलिखित वाक्यों का स्मरण किया जाए तो बहुत सारे नकारात्मक विचार स्वयमेव छँटने लगेंगे और सकारात्मक विचार आने लगेंगे। इससे हमारे मन की शक्ति बढ़ती है, मस्तिष्क तेज गति से कार्य करने लगता है, जिससे हमारा संपूर्ण विकास संभव है। उदाहरणार्थ:

1. सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।
2. मैं आत्मा आनंद स्वरूप हूँ।
3. मैं आत्मा शांत स्वरूप हूँ।
4. मैं पवित्र आत्मा हूँ।
5. यह शरीर ईश्वर की अमानत है।
6. मैं आत्मा सबसे सुखी हूँ।
7. मेरे ऊपर परमात्मा की छत्र–छाया है।
8. मेरे साथ स्वयं भाग्य विधाता भगवान हैं।

इस संबंध में कुछ योगाचार्यों का यह भी विचार है कि ध्यान के लिए शांत चित्त होकर बैठते ही जो विचार उमड़–घुमड़कर मन में आते हैं उन्हें आने देना चाहिए, उन पर दृष्टि केंद्रित करनी चाहिए तथा अनावश्यक एवं अवांछित संदेशों को यथासंभव फ़िल्टर भी करते रहना चाहिए। जैसे–जैसे ध्यान की अवधि बढ़ती जाएगी, वैसे–वैसे, शनैः–शनैः अनावश्यक एवं अवांछित विचारों के आने का क्रम भी ठहर जाएगा।

यदि हम रोज 30–40 मिनट अपने को यह समझने के लिए समय देते हैं कि मैं कौन हूँ, तो हमारे सोने की अवधि कम होती जाएगी और इस संबंध में योग गुरु जग्गी वासुदेव तो यहाँ तक कहते हैं कि जिस कार्य को करने में किसी को यदि दस दिन लगते हैं तो ध्यान साधना करने वाला ऐसा साधक उसे एक दिन में ही कर लेगा। हमारे दिमाग के दस में से नौ हिस्से अंधकार में होते हैं या ये हमारे अवचेतन

मस्तिष्क के भाग हैं। यही कारण है कि जब कभी भी हम उत्साहित होकर सकारात्मक निर्णय लेने की सोचते हैं तो ये अंधकारमय हिस्से उसे मना कर देते हैं क्योंकि ये अत्यंत शक्तिशाली हैं। उदाहरण के लिए, यदि आपने यह निर्णय लिया कि सुबह पाँच बजे उठेंगे और ध्यान लगाएँगे। सुबह ज्यों ही अलार्म बजता है कि ये दिमाग के नौ बटे दस हिस्से बताते हैं कि उठने की ऐसी जल्दी क्या है?, आराम से सो रहे हैं, फिर जब सुबह उठते हैं तो पछतावा होता है कि उठ नहीं पाए। पर, यह पछतावा दिमाग के एक बटे दसवें हिस्से को होता है, उन नौ बटे दसवें हिस्से को नहीं जिन्होंने उठने से रोका था। यह केवल यहीं तक सीमित नहीं होता अपितु जीवन के अन्य कार्यकलापों में भी ये अवचेतन मस्तिष्क के हिस्से हमेशा हावी रहते हैं और जब भी हम कुछ सकारात्मक सोचते हैं तो ये तुरंत उसे मना कर देते हैं। अतः, इस स्थिति को बदला जाना ज़रूरी है और यहीं पर ध्यान मददगार होता है। ध्यान की प्रक्रिया से हमारा अवचेतन मस्तिष्क सचेतन मस्तिष्क के रूप में बदलने लगता है तथा जहाँ अंधकार था वह प्रकाश के रूप में बदलने लगता है। साथ ही, यह प्रकाश पुंज को गहरा करने लगता है, और गहरा करता है तथा अंत में साधक को ही प्रकाश पुंज बना देता है। जब हम एकांत में केवल अपने साथ बैठते हैं तो प्रसन्नता की यह स्थिति आती है। कई बार हमें लगता है कि एकांत के बजाय दूसरों के साथ बैठने में अधिक प्रसन्नता मिलती है, पर यह केवल एक भ्रम है क्योंकि दूसरा आज नहीं तो कल अलग हो जाएगा, पर हमें अपने साथ सदा रहना है। इसलिए ज़रूरी है कि थोड़ी देर शांत होकर एकांत में केवल अपने साथ बैठा जाए और यह स्मरण रहे कि एकाकीपन कभी भी अकेलापन नहीं होता। इस संबंध में एक बड़ी महत्वपूर्ण बात यह कही गई है कि एकाकीपन नकारात्मक स्थिति है – अंधकार की भांति। एकाकीपन का अर्थ है कि व्यक्ति को किसी अभाव का अनुभव हो रहा है, वह असीम रिक्तता से डर रहा है जबकि अकेलेपन का अर्थ बिल्कुल ही भिन्न है। इसका यह अर्थ नहीं है कि व्यक्ति

किसी का अभाव महसूस कर रहा है बल्कि उसका अर्थ है कि व्यक्ति ने स्वयं को पा लिया है । स्वयं को पाकर जीवन का आलोक और आनंद पा लिया जाता है । ऐसी स्थिति में हमारी चेतना रिक्त हो जाती है और ऐसी रिक्तता की स्थिति में एक चमत्कार घटित होता है। जब ध्यानकर्ता को जानने के लिए कुछ भी नहीं बचता तो वह चेतना स्वयं में लौट आती है। वह वर्तुलाकार हो जाती है। कोई अवरोध न पाकर वह अपने स्रोत में वापस लौटती है और जैसे ही वह वर्तुल पूरा होता है, साधक साधारण व्यक्ति नहीं रह जाता अपितु उस भगवत्ता का अंश बन जाता है जो इस अस्तित्व को घेरे हुए है। अब साधक केवल साधक न रहा अपितु वह सारे विश्व का एक हिस्सा हो गया और अब उसकी धड़कन स्वयं ब्रह्मांड की धड़कन है।

ध्यान के अभ्यास के लिए ब्रह्ममुहूर्त (प्रात: 3.30 से 5.30 तक) का समय अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है, इस समय ध्यान लगाने से आपको दिन भर शक्ति मिलती रहेगी। यदि बदलती जीवन शैली के कारण इतना सुबह उठना संभव न हो, तो सूर्योदय से आधा घंटा पहले भी ध्यान लगाने के लिए उत्तम समय है। योगी, परमहंस, सन्यासी, ऋषि आदि सुबह ही ध्यान करते हैं और उनके द्वारा छोड़ी गई तरंगें इस समय पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त रहती हैं, अत:, सामान्य व्यक्ति को भी इस समय ध्यान आसानी से लग जाता है। स्वामी सुखबोधा नंद जी जैसे योगी पुरुष बताते हैं कि इस समय स्नान करने की भी आवश्यकता नहीं है, बस मन में सोचकर अपनी प्रिय नदी में स्नान कर लें क्योंकि स्नान आदि करने में सुबह का बहुमूल्य समय नष्ट हो जाता है । आलस्य छोड़कर उठ जाना चाहिए, पाँच–दस बार प्राणायाम कर लें, कोई आसान–सा आसन कर लें और फिर ध्यान लगाना शुरू कर सकते हैं । नियमित ध्यान करने की आदत पड़ जाने पर हमारी दिनचर्या भी सुव्यवस्थित हो जाएगी। उदाहरण के लिए, यदि हमने सुबह के साढ़े पाँच बजे ध्यान करने का नियम बनाया तो कम से कम पाँच या सवा पाँच बजे तक तो उठना ही पड़ेगा और इस समय उठने के लिए कम से कम रात के दस या ग्यारह बजे तक सोना भी ज़रूरी होगा और तदनुसार इसका असर हमारे सारे दैनंदिन कार्यकलापों पर पड़ेगा और प्रकारांतर से वे भी सुव्यवस्थित हो जाएँगे । यदि किसी के पास सुबह का समय नहीं है तो शाम को भी ध्यान किया जा सकता है।

घर में ध्यान के लिए एक ऐसा स्थान अवश्य होना चाहिए जहाँ शांति से बैठा जा सके। कई लोग सोचते हैं कि ऐसा स्थान सामान्य घरों में होना संभव नहीं है। पर, इस मामले में 'जहाँ चाह वहाँ राह' वाली उक्ति को अमल में लाया जाए तो हर घर में थोड़ी–सी जगह ज़रूर निकल आएगी। यह जगह बालकनी का कोना, अतिरिक्त बेडरूम, पढ़ाई का स्थान, घर के सबसे ऊपर का खंड या इसमें बना हुआ कमरा (एटिक), ड्राइंग रूम की खाली जगह आदि कोई भी स्थान हो सकता है। कुछ घरों में बेड और दीवाल के बीच में कुछ ख़ाली जगह होती है और यदि यह जगह दो–तीन फ़ुट चौड़ी और छह–सात फ़ीट या उससे अधिक लंबी है तो यह योगासन, प्राणायाम और ध्यान तीनों के लिए उपयुक्त रहेगी। बस, इतना अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि वहाँ पर बहुत अधिक सामान न हो तथा चीजें बेतरतीब न रखी हों । वह स्थान यदि हवादार हो, तो अधिक अच्छा रहेगा। ध्यान के लिए चटाई, ग़लीचा, योगा मैट या आरामदायक कंबल को आसन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। यथासंभव, कुर्सी, टेबुल या नंगे फर्श पर बैठकर ध्यान लगाने से बचना चाहिए। जिस कमरे में ध्यान लगा रहे हैं, उस कमरे का रंग यदि सफ़ेद हो तो वह ध्यान के लिए अधिक अच्छा रहेगा। ध्यान लगाते समय कमरे में तेज रोशनी नहीं होनी चाहिए। कुछ लोगों को संगीत सुनकर ध्यान लगाने में मदद मिलती है । वैसे भी, संगीत केवल शांत–चित्तता प्रदान करने वाला तत्व ही नहीं है अपितु तनाव को भी दूर करता है । संगीत सुनते समय दिमाग में कुछ ऐसे शक्तिशाली रसायन निकलते हैं जो मन:स्थिति को भी ठीक करने का कार्य करते हैं। ध्यान के समय ऐसा संगीत सुनें जिसकी राग–रागिनियां चिंतन को अतल गहराइयों तक ले जाएँ। ध्यान के लिए भारतीय शास्त्रों में जप का भी विधान है। हम जब मानसिक जप करते हैं तो सूक्ष्म प्राणों का कार्य शुरू हो जाता है, एकाग्रता बढ़ने लगती है और हम स्थूल देह से आगे कारण देह की ओर बढ़ने लगते हैं। जप के महत्व पर महामहोपाध्याय योगी गोपीनाथ कविराज ने लिखा है, वर्णात्मक स्थूल शब्द के अंतराल में नादात्मक चेतन शब्द को पहचान लेने पर जब वर्णगत सभी दोषों का परिहार हो जाता है तब चैतन्य ही मुख्य होता है। एकाग्रता के यही लक्षण हैं। इस अवस्था में वक्र वायु के तरंग नहीं रहते केवल सरल गति रहती है, यह चैतन्य शक्ति की लीला है जो महामाया का सहारा लेकर रहती है।

मंत्रों का जप करने से सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है और निरंतर जप करते रहने पर हमारा मस्तिष्क चुंबकीय केंद्र बन जाता है। मंत्र कोई भी हो सकता है, जो साधक को प्रिय हो। कई योग गुरु अक्षर का ध्यान करने की बात कहते हैं। ॐ को ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद का सार कहा गया है। 'प्रश्नोपनिषद' में महर्षि पिप्पलाद ने को क्लेशों की औषधि कहा है तथा महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा है कि

ॐ के ध्यान से कुवृत्तियाँ समाप्त हो जाती हैं। 'छांदोग्योऽपनिषद' के प्रथम खंड में बताया गया है कि ॐ का उच्चारण या ध्यान करने वाले जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं तथा समृद्धिशाली होते हैं। ध्यान के समय कोई कीर्तन भी कर सकते हैं या कोई गुरु मंत्र हो तो उसका भी जप कर सकते हैं। आपका कोई आराध्य हो तो उसकी छवि का ध्यान और उसकी स्तुति भी कर सकते हैं। ध्यान के समय आकार में छोटी वस्तुओं का चिंतन नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे उलझन बढ़ती है, और कई बार अजीब–सी बेचैनी भी होने लगती है। अत:, इसके बजाय बड़ी वस्तुओं, जैसे – विशाल पर्वत श्रेणियों, उन पर दूर–दूर तक फैली सफ़ेद बर्फ़ की परतों, महासागर की उत्ताल तरंगों, भाँति–भाँति के पुष्पों से युक्त बड़े–बड़े उद्यानों, उगते हुए सूरज और अरुणाभ विशाल क्षितिज, सागर की अथाह जल राशि में अस्त हो रहे सूरज आदि दृश्यों का चिंतन करना चाहिए, इससे मन को स्थिर करने में तो मदद मिलेगी ही, चित्त भी अधिक प्रफुल्लित होगा तथा इसका सकारात्मक असर आपके दिन भर के कार्यों में भी दिखाई पड़ेगा।

ध्यान की एक शक्तिशाली तकनीक योगनिद्रा है। मन संस्थानों को पूर्ण रूप से शिथिल कर देने की अवस्था ही योगनिद्रा है। योगनिद्रा अचेतन मन को विश्राम देने तथा मनुष्य के प्राण प्रवाह को संतुलित बनाए रखने का माध्यम है। कुछ योगाचार्यों ने योगनिद्रा को हल्की या अल्पकालिक समाधि भी कहा है। इस अवस्था में व्यक्ति की चेतना का संबंध असीम चेतन शक्ति से हो जाता है और अत्यल्प समय में ही उसे अत्यधिक ऊर्जा मिल जाती है। आज ये ऐतिहासिक किंवदंतियां कि नेपोलियन बोनापार्ट तथा रॉबर्ट क्लाइव जैसे योद्धा युद्ध के मैदान में ही किसी पेड़ से सटकर घोड़े की पीठ पर बैठे– बैठे ही नींद लेकर तरोताज़ा हो जाते थे, वैज्ञानिकों की नज़र में अब एक कपोल कल्पना न होकर वास्तविकता है। योगनिद्रा द्वारा अतीन्द्रिय क्षमता संपन्न बनने वाली बात की पुष्टि करते हुए प्रसिद्ध जर्मन विद्वान वेन गोयथे ने कहा है कि उन्होंने अपनी प्रतिभा को प्रखर बनाने में इसका सतत प्रयोग किया है।

यदि उत्कृष्ट ध्यान साधना हो तो बंद कमरे में भी योगी अपनी योगमाया से प्रकट हो सकते हैं। योगाचार्य श्री अशोक कुमार चट्टोपाध्याय की पुस्तक पुराण पुरुष योगाचार्य श्री श्यामाचरण लाहिड़ी में योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी महाशय से जुड़े ऐसे ही एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रसंग का उल्लेख किया गया है जिसमें योगिराज लाहिड़ी महाशय ने एक बंद कमरे में अपने गुरु योगिराज बाबा जी का साक्षात दर्शन (लाहिड़ी महाशय अपने गुरूजी को बाबा जी के नाम से ही संबोधित करते थे) अपने मित्रों को कराया था। मैं इस प्रसंग को उद्धृत करता हूँ। उद्धरण प्रारंभ:

एक दिन कई मित्रों के साथ धर्म चर्चा चल रही थी। एक ने कहा, आजकल जो अलौकिक संपन्न हो, ऐसा कोई साधु नहीं है। श्यामाचरण ने कहा ऐसी कोई बात नहीं, अब भी वैसे महापुरुष हैं। यदि आप लोग देखना चाहते हैं तो ध्यान बल से मैं वैसे महापुरुष को यहाँ बुलाकर दिखा सकता हूँ। नवीन साधक स्वयं को संयत नहीं कर पाया। मित्रों का कौतूहल बढ़ गया। उन्हें तो यह आश्चर्यजनक लगा। उन लोगों ने बार–बार श्यामाचरण से अनुरोध किया और अंत में महापुरुष की मर्यादा की रक्षा के लिए उन्होंने स्वीकृति प्रदान करते हुए कहा, 'ठीक है, मेरे लिए एक एकांत कमरे की व्यवस्था कर दो और उसके दरवाज़े खिड़की बंद करके रखो।' गुरुदेव द्वारा दिए गए वचन का उन्हें ध्यान आया और वे उसी के भरोसे कोठरी में प्रवेश करते हैं तथा योगासन की मुद्रा में बैठकर गुरु के चरणों में अपनी आकुलता–प्राण प्रार्थना निवेदित करने लगे। थोड़ी ही देर में एक उज्ज्वल ज्योति–पुंज प्रकट हुआ और धीरे–धीरे बाबा जी के रूप में परिवर्तित हो गया। आसन पहले से ही निर्धारित था। उस पर बैठते हुए बाबा जी ने गंभीर स्वर में कहा – 'प्रतिज्ञाबद्ध होने के नाते ही तुम्हारे बुलाने पर यहाँ आया हूँ, किंतु सिर्फ़ तमाशे या प्रदर्शन के लिए मुझे स्मरण करना तुम्हारे लिए उचित नहीं। साधक श्यामाचरण चुपचाप बैठे रहे और गुरु की गंभीर वाणी सुनकर उन्होंने मन ही मन सोचा कि यह तो एक बड़ी भूल हो गई। बाबा जी ने दृढ़ स्वर में कहा, भविष्य में मेरा स्मरण करने पर तुम्हें मेरे दर्शन नहीं होंगे। जब भी तुम्हें ज़रूरत होगी, मैं स्वयं ही आऊँगा।' अन्याय के प्रति श्यामाचरण ने क्षमा माँगते हुए कहा, 'अविश्वासियों के मन में विश्वास पैदा करना ही मेरा उद्देश्य था और सर झुकाते हुए उन्होंने निवेदन किया, कृपा करके जब आए ही हैं तो सब को एक बार दर्शन देकर कृतार्थ करें।' महायोगी ने अपनी सहमति प्रकट करते हुए दरवाजा खोलने को कहा। श्यामाचरण ने दरवाजा

खोला। सभी मित्र बाहर प्रतीक्षा कर रहे थे। दरवाजा खुलते ही सब भीतर आए। महायोगी का दर्शन किया और प्रणाम करके धन्य हो गए। उद्धरण समाप्त।

ध्यान और शिथिलीकरण (Relaxation) की तकनीक का प्रयोग करके कई असाध्य रोगों एवं दर्द से छुटकारा पाया जा सकता है। विद्वानों की मान्यता है कि meditate और medicate की मूल धातु एक ही है। (The root of the word meditation is similar to the root word for medical or medicate - it implies a sense of attending to or paying attention to something). हज़ारों साल पहले हमारे ऋषियों ने इस बात की खोज की थी कि पूरा चित्त (मन) शरीर में नहीं है जबकि पूरा शरीर मन में है। आज के अनुसंधानकर्ताओं ने यह खोज निकाला है कि शरीर का हर दर्द और उसका कारण मन में है। हमारे ऋषियों ने यह सिद्ध किया है कि ध्यान के द्वारा दर्द पर प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है। कुछ चिकित्सकों का मत है कि ध्यान और शिथिलीकरण (Meditation and Relaxation) की तकनीक का उपयोग करके विभिन्न प्रकार के रोगों जैसे – सिर दर्द, माइग्रेन, हाई ब्लड प्रेशर आदि को दूर किया जा सकता है। यहां तक कि आर्थराइटिस, ओस्टियोपोरोसिस तथा कैंसर जैसी असाध्य बीमारियों के दर्दों को भी कम किया जा सकता है। ध्यान और शिथिलीकरण की विभिन्न विधियों का प्रयोग करके न केवल चित्त को अपितु शरीर को भी स्वस्थ किया जा सकता है। ब्रह्मकुमारी के राजयोग में ध्यान पर इसीलिए अधिक बल दिया जाता है। श्री श्री रविशंकर के 'आर्ट ऑफ लिविंग' तथा सद्गुरू जग्गी वासुदेव के 'ईशा फ़ाउंडेशन' द्वारा योग और ध्यान के माध्यम से चित्तवृत्तियों पर नियंत्रण, एकाग्रता और स्व स्वरूप की अनुभूति आदि से संबंधित तमाम तरह की साधनाएँ करवाई जाती हैं। इस तरह की साधना शिविरों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण संस्थानों के सीईओ तक सहभागिता करते हैं। भारतीय मूल के प्रख्यात अमरीकी लेखक एवं वैकल्पिक चिकित्सा के मशहूर पैरोकार श्री दीपक चोपड़ा ने उन 24 कारणों का उल्लेख किया है जिन्हें पाने हेतु हर व्यक्ति के लिए ध्यान योग सीखना ज़रूरी है। आज के तनावपूर्ण बैंकिंग माहौल में कार्य कर रहे बैंक कार्मिकों के लिए तो यह और भी ज़रूरी हो गया है:–

1. तनाव घटाने के लिए
2. अपने वास्तविक स्वरूप के संपर्क में आने के लिए
3. अपनी समस्त इच्छाओं की पूर्ति के लिए
4. अंतर्मन से अधिक प्रभावित होने के लिए
5. बुरी आदतें त्यागने के लिए
6. बेहतर संबंधों के लिए
7. दिनचर्या में सुधार के लिए
8. जीवन में परिपूर्णता की स्मृति बहाल करने हेतु
9. अंतरात्मा से साक्षात्कार के लिए
10. चेतना की उच्चतम स्थिति अनुभव करने के लिए
11. विश्व शांति फैलाने के लिए
12. मीठी नींद के लिए
13. अधिक ऊर्जा के लिए
14. एकाग्रता में वृद्धि के लिए
15. थकान दूर करने के लिए
16. जरावस्था (बुढ़ापे) के प्रभावों से बचने के लिए।
17. संवेदी क्षमता में वृद्धि के लिए
18. बिना शर्त प्यार महसूस करने के लिए
19. शारीरिक संरचना में व्याप्त विषों के त्याग के लिए
20. पूर्वाग्रह हीन बन जाने के लिए
21. उपयुक्त निर्णय लेने में सहायता के लिए
22. हल्का–फुल्का व चिंतामुक्त महसूस करने के लिए
23. जीवन के मौन के रहस्योद्घाटन के लिए तथा
24. सृजनशीलता बढ़ाने के लिए।

महर्षि पतंजलि के योग सूत्रों में टेलीपैथी (दूर संवेदन) एवं लेविटेशन (उर्ध्वगमन) की बात कही गई है। योग वशिष्ठ नामक ग्रंथ में टाइम ट्रैवेल (समय यात्रा) अर्थात् दूसरे लोकों में जाने तक की चर्चा की गई है। यह उन महर्षियों की ध्यान साधना का ही परिणाम था कि इतनी ऊँची बातें सोचते थे और केवल सोचते ही नहीं थे बल्कि उन्हें कार्य रूप में परिणत भी करते थे। ध्यान योग का सच्चा एवं प्रबल साधक आज भी अपने अंदर ऐसी ऊर्जा का संचयन कर सकता है।

यह ध्यान की उच्चतम साधना ही है जो यह अनुभव करा देती है कि परमात्मा तक की यात्रा लंबी नहीं है और परमात्मा भी दूर नहीं है। परमात्मा हमारे हृदय में ही है, हृदय की धड़कन में है, हमारे ख़ून में है, हड्डियों व माँस– मज्जा में है। बस ध्यान के पथ पर चलने की ज़रूरत है, आँखें बंद करो और भीतर प्रवेश कर जाओ।

आलेख

कोविड-19 से निपटने के लिए नीतिगत प्रतिक्रिया

कोविड-19 महामारी के मानवीय और आर्थिक प्रभाव को सीमित करने के लिए अलग-अलग सरकारें प्रमुख आर्थिक प्रतिक्रियाएँ ले रही हैं। कोविड-19 महामारी से पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई है। बहुत से देशों की जीडीपी में गिरावट आ गयी। अफ़ग़ानिस्तान, अल्बानिया आदि कुछ देश बहुत ही कम प्रभावित हुए।

श्वेता शर्मा
परिवीक्षाधीन अधिकारी
टेल्को कॉलोनी शाखा, जमशेदपुर

भारत की पृष्ठभूमि :

भारत में कोविड-19 का पहला मामला 30 जनवरी, 2020 को दर्ज किया गया था और तब से मामलों की संख्या में वृद्धि जारी है, विशेष रूप से, महामारी की दूसरी लहर के दौरान। पहले लहर में पूरे देश में लॉकडाउन लगाया गया था और उसके बाद धीरे-धीरे फिर से लॉकडाउन को खोला गया, चुनिंदा नियंत्रण क्षेत्रों में प्रतिबंधों को लागू रखा गया। किन्तु, दूसरी लहर के दौरान अलग-अलग राज्यों ने अपने स्तर पर लॉकडाउन लगाया और स्थिति पर क़ाबू किया। कोविड-19 का आर्थिक प्रभाव पर्याप्त और व्यापक-आधारित रहा है। कोविड-19 के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए अभूतपूर्व लॉकडाउन के कारण सकल घरेलू उत्पाद तेज गति के साथ प्रभावित हुआ।

अर्थव्यवस्था में सुधार :

पहली कोविड-19 लहर और प्रारंभिक राष्ट्रव्यापी तालाबंदी के बाद, 15 अप्रैल, 2020 को आर्थिक गतिविधियों का समर्थन करने के लिए, सरकार ने 20 अप्रैल, 2020 से गैर-हॉटस्पॉट के रूप में नामित भौगोलिक क्षेत्रों में कई छूट उपायों की घोषणा की। 29 अप्रैल, 2020 को सरकार ने राज्यों द्वारा नामित नोडल अधिकारियों द्वारा प्रबंधित प्रवासी श्रमिकों सहित फंसे हुए लोगों के अंतर-राज्यीय आवागमन की अनुमति दी। 25 मई 2020 को आर्थिक गतिविधियों में कुछ क्रमिक छूट की अनुमति दी गई और घरेलू हवाई यात्रा को फिर से शुरू किया गया। 12 मई 2021 को प्रधान मंत्री ने पहले घोषित मौद्रिक और राजकोषीय उपायों सहित सकल घरेलू उत्पाद के लगभग 10 प्रतिशत के राहत पैकेज की घोषणा की। 30 सितंबर 2021 को केंद्र सरकार ने राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश सरकारों को 15 अक्तूबर के बाद चरणबद्ध रूप से स्कूलों और कोचिंग संस्थानों को फिर से खोलने पर निर्णय लेने के लिए अनलॉक 5.0 दिशानिर्देश जारी किए। सभाओं की सीमा 200 लोगों तक बढ़ा दी गई।

दूसरी कोविड-19 लहर के बाद, अधिकांश राज्यों ने 2021 की दूसरी तिमाही में अतिरिक्त लॉकडाउन उपायों की घोषणा की है। 3 जनवरी, 2021 को, भारत के केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) ने एस्ट्राजेनेका वैक्सीन और कोवैक्सिन (स्थानीय फर्म भारत बायोटेक द्वारा विकसित) को आपातकालीन उपयोग स्वीकृति (ईयूए) प्रदान किया। दोनों भारत में घरेलू रूप से निर्मित होते हैं। 11 जनवरी, 2021 को प्रधान मंत्री ने 16 जनवरी से दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान की शुरुआत की घोषणा की, जिसका लक्ष्य आने वाले महीनों में लगभग 300 मिलियन लोगों को टीकाकरण करना है। 1 मई से 18 वर्ष से ऊपर के सभी व्यक्ति टीकाकरण के लिए पात्र हैं, वैक्सीन निर्माताओं को अब 50 प्रतिशत खुले बाज़ार में बेचने की अनुमति है।

प्रमुख नीति प्रतिक्रियाएं :

राजकोषीय :

भारत के केंद्र सरकार के वित्तीय सहायता उपायों को दो व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

1) ऊपरोक्त उपाय जिनमें सरकारी खर्च शामिल हैं।

2) व्यवसायों का समर्थन करने और कई क्षेत्रों में ऋण प्रावधान को बढ़ाने के लिए रूपायित किए गए निम्न उपाय।

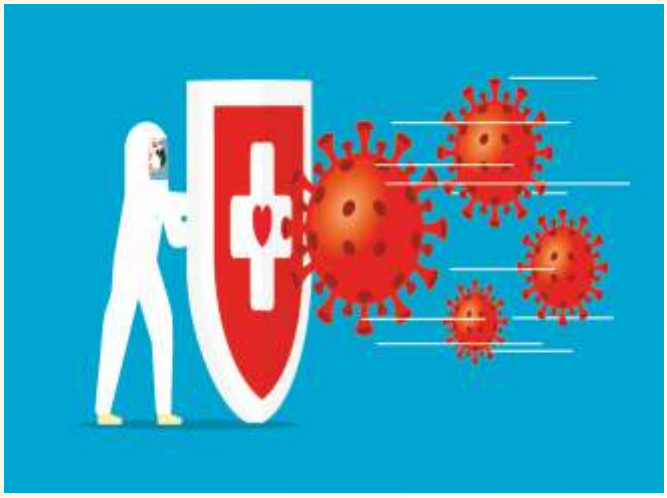

महामारी की प्रतिक्रिया के शुरुआती चरणों में, सामाजिक सुरक्षा और स्वास्थ्य देखभाल पर मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित किया गया। इनमें इन-काइंड (भोजन, रसोई गैस) और निम्न-आय वाले परिवारों को नकद हस्तांतरण (जीडीपी का 1.2 प्रतिशत); कम वेतन वाले कामगारों को वेतन सहायता और रोज़गार का प्रावधान (जीडीपी का 0.5 प्रतिशत); स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में कामगारों के लिए बीमा प्रावरण; और हेल्थकेयर इंफ्रास्ट्रक्चर (जीडीपी का 0.1 प्रतिशत) शामिल है। बाद में अक्तूबर और नवंबर 2020 में घोषित किए गए उपायों में अतिरिक्त सार्वजनिक निवेश (केंद्र सरकार द्वारा उच्च पूंजीगत व्यय और राज्यों को ब्याज मुक्त ऋण, सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 0.2 प्रतिशत) और कुछ क्षेत्रों को लक्षित करने वाली सहायता योजनाएं शामिल हैं। बाद में 13 प्राथमिक क्षेत्र को उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना में छूट देना शामिल किया गया। कई क्षेत्रों में कर अनुपालन बोझ को कम करने के लिए कई उपायों की भी घोषणा की गई है, जिसमें कुछ कर-फाइलिंग और अन्य अनुपालन समय-सीमा को स्थगित करना और अतिदेय जीएसटी फाइलिंग के लिए जुर्माना ब्याज दर में कमी शामिल हैं। इसी तरह से दुबारा कर के बोझ को कम करने के लिए अप्रैल 2021 में भी छूट दी गई। सरकार के घाटे की स्थिति पर तत्काल प्रत्यक्ष प्रभाव के बिना उपायों का उद्देश्य व्यवसायों, गरीब परिवारों, विशेष रूप से प्रवासियों और किसानों, संकटग्रस्त बिजली वितरण कंपनियों को ऋण सहायता प्रदान करना है और कृषि क्षेत्र के लिए लक्षित समर्थन के साथ-साथ कुछ विविध समर्थन उपाय करना भी है। व्यापार-सहायता पैकेज के प्रमुख तत्व सूक्ष्म, लघु और मध्यम आकार के उद्यमों और गैर-बैंक वित्तीय कंपनियों के लिए विभिन्न वित्तीय क्षेत्र के उपाय हैं, जबकि किसानों को अतिरिक्त सहायता मुख्य रूप से किसानों को रियायती ऋण प्रदान करने के रूप में होगी। स्ट्रीट वेंडर्स के लिए क्रेडिट सुविधा के रूप में भी उपाय किए गए। कृषि क्षेत्र के प्रति दिया गया समर्थन मुख्य रूप से बुनियादी ढांचे के विकास के लिए है।

वित्त वर्ष 2021-22 के लिए 1 फरवरी, 2021 को केंद्र सरकार द्वारा पेश किए गए बजट में देश के कोविड-19 टीकाकरण कार्यक्रम (350 बिलियन रुपये) के प्रावधान सहित स्वास्थ्य और कल्याण पर खर्च का विस्तार किया गया। अप्रैल 2021 में, संक्रमणों में हालिया उछाल के जवाब में, केंद्र सरकार ने घोषणा की कि मई और जून में (लगभग 260 बिलियन रुपये की लागत के साथ) 800 मिलियन व्यक्तियों को मुफ्त खाद्यान्न प्रदान किया जाएगा जिस प्रकार 2020 में दिया गया था। केंद्र सरकार ने वित्त वर्ष 2021-22 (150 अरब रुपये) तक पूंजीगत व्यय के लिए राज्यों को ब्याज मुक्त ऋण प्रदान करने की योजना को भी बढ़ाया और राज्य सरकारें को आपदा प्रतिक्रिया कोष (जून 21 से मई 21 तक) जारी करने में तेजी लाई। अंत में, टीकों, ऑक्सीजन और ऑक्सीजन से संबंधित उपकरणों पर सीमा शुल्क और अन्य करों को उनकी उपलब्धता को बढ़ावा देने के लिए माफ कर दिया गया।

मौद्रिक और माइक्रो-वित्त :

- मार्च 2020 के बाद से, भारतीय रिज़र्व बैंक ने रेपो और रिवर्स रेपो दरों को क्रमशः 115 और 155 आधार अंकों (बीपीएस) से घटाकर 4.0 और 3.35 प्रतिशत कर दिया, और दीर्घावधि रेपो परिचालन सहित तीन उपायों में तरलता उपायों की घोषणा की।
- आरक्षित नकदी निधि(सीआरआर) में 100 बीपीएस की कटौती, और सीमांत स्थायी सुविधा (एमएसएफ) में वैधानिक तरलता अनुपात (एसएलआर) के 3 प्रतिशत की वृद्धि की गई (अब आगे 10 सितंबर, 2021 तक बढ़ा दी गई है) और खुले बाजार संचालन (सरकारी प्रतिभूतियों की एक साथ खरीद और बिक्री सहित), जिसके परिणामस्वरूप, सितंबर तक सकल घरेलू उत्पाद का 5.9 प्रतिशत संचयी चलनिधि दिया गया।
- भारतीय रिज़र्व बैंक ने कर्जदारों और कर्जदाताओं दोनों को राहत दी है।
- भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने मूल्य-निर्धारित लिखतों पर ऋण चूक से संबंधित मानदंडों में

अस्थायी रूप से ढील दी और सार्वजनिक शेयरधारिता के आवश्यक औसत बाजार पूंजीकरण और लिस्टिंग की न्यूनतम अवधि को कम कर दिया।

- 1 अप्रैल 2021 को, भारतीय रिज़र्व बैंक ने राज्य सरकार की अल्पकालिक तरलता की ज़रूरतों में मदद करने और निर्यात प्रत्यावर्तन सीमा में ढील देने के लिए सुविधा बनाई।
- इससे पहले, भारतीय रिज़र्व बैंक ने खुदरा क्षेत्र और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के लिए ऋण प्रवाह को बढ़ावा देने के लिए नियामक उपायों की शुरुआत की और एमएसएमई और स्थावर संपदा के विकासकर्ताओं (बाद में एनबीएफसी से ऋण के लिए विस्तारित) को ऋण के आस्ति वर्गीकरण पर नियामक निषेध प्रदान किया।
- ग्रामीण बैंकों, आवास वित्त कंपनियों और छोटे और मध्यम आकार के उद्यमों के लिए विशेष पुनर्वित्त सुविधाएं प्रदान कीं।
- चलनिधि कवरेज अनुपात(एलसीआर) में अस्थायी कमी और बैंकों पर लाभांश भुगतान करने पर प्रतिबंध जैसे कुछेक उपाय किए गए।
- भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड(सेबी) ने ब्रोकर टर्नओवर शुल्क और पब्लिक निर्गम, राइट्स इश्यू और शेयरों की वापसी खरीद के लिए ऑफर दस्तावेज़ों पर शुल्क कम किया।
- आंशिक गारंटी के साथ तनावग्रस्त सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम(एमएसएमई) के लिए अधीनस्थ ऋण ।
- निर्यातकों और आयातकों को ऋण सहायता और लघु व्यवसाय पुनर्वित्त सुविधाओं के कार्यकाल का विस्तार।
- बैंकों को पुनर्रचित खातों के लिए उनके द्वारा पहले से धारित प्रावधान के अतिरिक्त पांच प्रतिशत का अतिरिक्त प्रावधान बनाए रखने की आवश्यकता।
- सरकार ने सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम(एमएसएमई) के लिए आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना (ईसीएलजीएस) को पहले 30 नवंबर, 2020, फिर 31 मार्च, 2021 और अब 30 सितंबर, 2021 तक बढ़ाया, जबकि साथ ही पात्रता मानदंड में ढील दी। मई के अंत में, भारतीय रिज़र्व बैंक ने विभिन्न भुगतान प्रणाली आवश्यकताओं और इमरजेंसी क्रेडिट लाइन गारंटी स्कीम (ईसीएलजीएस) योजना के अनुपालन के लिए निर्धारित समय सीमा को 30 सितंबर, 2021 तक बढ़ा दिया।

विनिमय दर और भुगतान संतुलन :

16 मार्च, 2020 को, भारतीय रिज़र्व बैंक ने समान मात्रा और अवधि के साथ पिछले एक के अलावा एक दूसरे एफएक्स स्वैप(अदला–बदली) (2 बिलियन डॉलर, 6 महीने, नीलामी–आधारित) की घोषणा की। कॉरपोरेट बॉन्ड में विदेशी पोर्टफोलियो निवेश(एफ पी आई) की सीमा वित्त वर्ष 2020–21 के लिए बकाया स्टॉक के 15 प्रतिशत तक बढ़ा दी गई है। केंद्र सरकार द्वारा जारी निर्दिष्ट प्रतिभूतियों में अनिवासी निवेश पर प्रतिबंध हटा दिया गया है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति को समायोजित किया गया है जिसमें कहा गया है कि भारत के साथ भूमि सीमा साझा करने वाले देश की एक इकाई सरकार की मंज़ूरी प्राप्त करने के बाद ही निवेश कर सकती है।

निष्कर्ष :

इस प्रकार भारत ने बहुत से देशों की तरह अपने सकल देशी उत्पाद(जीडीपी) में हुई कमी को सुधारने के कई उपाय किए जिनमें मौद्रिक नीति एवं विदेशी विनिमय नीतियों में परिवर्तन किए गए। बहुत से उपाय सफल रहे और कुछ और उपाय किए जा सकते हैं ताकि भारत की अर्थव्यवस्था कम से कम प्रभावित हो। कोविड का प्रभाव कई सालों तक रहेगा, इसलिए सरकार सभी बड़ी कंपनियों (बैंकों, दूरसंचार, सार्वजनिक उद्यमों और अन्य आवश्यक व्यवसायों को छोड़कर) को 2021 में 2020 की दूसरी और तीसरी तिमाही के लिए लाभ कर के भुगतान को स्थगित करने की अनुमति देने वाले कर आस्थगित उपायों को भी अपना सकती है। कम पण्यावर्त(टर्नओवर) वाले छोटे व्यवसाय शेष 2021 के लिए लाभ कर के भुगतान में आंशिक या पूर्ण रूप से छूट दिया जा सकता है। वैक्सीन की उपलब्धता को बढ़ा कर और लोगों में जागरूकता फैला कर कोविड–19 के दुष्प्रभाव को कम करने का प्रयास किया जा सकता है ।

"जब कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य के लिए सब कुछ दांव पर लगाने को तैयार हो, तो उसका जीतना सुनिश्चित है।"

– स्वामी विवेकानंद

कविता

माँ के महत्व को जानो

मनीष अभिमन्यू चौरसिया
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, अनंतपुर

जानो जानो,
'माँ' के महत्व को जानो,
अपने बच्चों के प्रति उसके लगाव को जानो,
जिस आँचल तले बच्चों का लालन–पालन करती वह,
उस आँचल को जानो...

माँ है तो घर का आँगन खिला है,
वरना उसके बिना तो जीवन का आँगन सूना है।
वही है जिसके चलते बागों में खुशहाली है,
क्योंकि उसकी लीला अद्‌भुत और निराली है।
जानो जानो,
'माँ' के महत्व को जानो...

यूँ सह जाती हर स्थिति परिस्थिति को,
पर कभी हटने नहीं देती अपने बच्चों की चुस्ती–मस्ती को,
डूबने नहीं देती अपनी ममता रूपी कश्ती को,
साहिलों को छूकर दिखायेगी उसकी कश्ती,
यह चुनौती है लहरों को!
जानो जानो,
'माँ' के महत्व को जानो...

जो माप सके उसके प्यार का मापदंड ऐसा कोई तोल नहीं,
वो है इतनी सहज कि उसके प्यार का दुनिया में कोई मोल नहीं,
जो मैला कर दे उसकी पवित्रता को ऐसा कोई द्रव्य नहीं,
जो निर्झर कर दे उसकी डालियों को ऐसी कोई ऋतु नहीं,
जानो जानो,
'माँ' के महत्त्व को जानो...

कहने के लिए तो 'माँ' शब्द एक है,
परंतु उसके अर्थ अनेक हैं
इसलिये इस एक शब्द की शाब्दिकता पर नहीं,
उसकी भावनात्मक मौलिकता को जानो....
जानो जानो,
'माँ' के महत्व को जानो...

आलेख

कोविड - 19 : मेरा अनुभव

कलयुग में अपराध का बढ़ा इतना प्रकोप
आज फिर से कांप उठी धरती माता की कोख
समय-समय पर प्रकृति देती रही कोई न कोई चोट
लालच में इतने अंधे हुए मानव को नहीं रहा कोई खौफ ।

कोरोना महामारी किसी परिचय की मोहताज नहीं है। अमिताभ बच्चन हों या एक मज़दूर, कोरोना से सभी समान रूप से आतंकित हैं। कोरोना महामारी की खराब स्थिति मीडिया गहराई से प्रस्तुत कर रहा है। मैं यहां इस बारे में बात करना चाहती हूँ कि इस महामारी के साथ हमारा जीवन कैसे बदल गया है।

1) प्रकृति का संदेश

मनुष्य ने इस सुंदर पृथ्वी को अपने लोभ के कारण विनाश के कगार पर ला कर रख दिया है। हम भूल गए हैं कि पृथ्वी केवल मानव का घर नहीं अपितु अन्य प्रजातियों का भी कुटुंब है। धरती की सहनशक्ति का अंतिम चरण हम 2020 से तांडव के रूप में देख रहे हैं क्योंकि मानव सह-अस्तित्व के नियम का उल्लंघन करता चला जा रहा है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि प्रकृति पल भर में संहार कर हमारा वजूद मिटा सकती है। कोरोना सिर्फ एक 'ट्रेलर' है – अगर हम प्रकृति के नियमों का पालन नहीं करेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से हमारा नामोनिशान मिट जाएगा।

2) वाह रे, 'लॉकडाउन' !

लॉकडाउन जहां हमारे आत्मसंयम तथा कर्तव्य पालन के संकल्प का प्रतीक है वहीं मज़दूरों एवं श्रमिकों के लिए ऐसा भीषण संकट है कि उन्हें दो वक़्त की रोटी जुटाना भी कठिन हो गया। भारत सरकार निरंतर देशवासियों के लिए मौद्रिक एवं भोजन राहत पैकेज की घोषणा करते हुए हमारी अर्थव्यवस्था को संभालने के पथ पर अग्रसर है। भारत को इस महामारी से एकता के साथ लड़ते देखकर मेरी यह धारणा बदली है कि केवल क्रिकेट ही भारतीयों को एकजुट कर सकता है। कोरोना के समक्ष हमारी सामूहिक लड़ाई ने यह साबित किया है कि हम राष्ट्रीय महत्व के मामलों में आपसी विरोध भूलकर बोध और शोध के मार्ग पर एक साथ एक सशक्त भारत का पुनर्निर्माण कर सकते हैं।

सुरभि मक्कड़
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली

3) हाय हाय ये मजबूरी, ना मेट्रो और ये दूरी – बैंकर्स की व्यथा

कोरोना महामारी में बैंकर्स का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। मेट्रो एवं अन्य जन सुविधाओं के अभाव में हम सभी ने लॉकडाउन में भी प्रतिदिन कार्य कर यह साबित किया है कि हम भी देश के सैनिक हैं। जिस प्रकार डॉक्टर देश की सेवा में जुटे हैं, उसी प्रकार अर्थव्यवस्था को संभालने में सरकार की सभी योजनाओं – 'कोविड लोन्स' तथा 'गारंटीड इमरजेंसी क्रेडिट लाइन' (जीईसीएल), को जनता तक पहुंचाने में बैंकर्स भी अर्थव्यवस्था के डॉक्टर की भांति देश के लिए सदैव कार्यरत हैं।

4) भागदौड़ और 'रीसेट' बटन

कोरोना और लॉकडाउन से पहले आप अपने पूरे परिवार सहित भोजन हेतु आखिरी बार कब बैठे थे? ऑफिस की भागदौड़ में हम परिवार की कीमत भूल ही गए थे। 'सर्फ एक्सेल टैगलाइन' है – दाग लगने से कुछ अच्छा होता है तो दाग अच्छे हैं..!! कोरोना वह दाग है जिसने 'रीसेट' बटन दबाकर हमें जीवन रूपी उपहार की सराहना करने का मौका दिया है।

अंततः हरिवंश राय बच्चन जी के शब्दों में,

क्या घड़ी थी, एक भी चिंता नहीं थी पास आई
कालिमा तो दूर, छाया भी पलक पर थी न छाई
वह गई तो ले गई उल्लास के आधार, माना
पर अथिरता पर समय की मुस्कराना कब मना है
है अंधेरी रात पर दीपक जलाना कब मना है।

हिंदी माह : उद्घाटन समारोह की झलकियां

प्रधान कार्यालय में हिंदी दिवस समारोह की झलकियां

सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार का दौरा

आलेख

स्व–जागरूकता के माध्यम से आत्म विकास

आत्म–जागरूक होने का सीधा सा मतलब है कि आपको अपने व्यक्तित्व की गहरी समझ है। स्व–जागरूकता वह अहसास है, जिसमें आपकी ताकत और कमज़ोरियां, सोच–विचार, अनुभूतियों, उद्देश्यों, क्षमताओं और आत्मविश्वास सहित आपकी भावनाएं व प्रेरणाएं शामिल हैं। हमारे बहुत से मनोभाव अत्यंत जटिल होते हैं तथा भावनात्मक रूप से एक प्रबुद्ध व्यक्ति उन जटिल मनोभावों तथा उनमें निहित अनुभूतियों को समझने और बाकी लोगों से खुद को अलग करने में सक्षम रहता है। आत्म–जागरूक होने से न सिर्फ एक मजबूत चिकित्सकीय संबंध बनाने में मदद मिलती है, बल्कि एक सामान्य व्यक्ति को अधिक सुसंगत निर्णय लेने में भी सहायता मिलती है जो समग्र कुशलता में योगदान देता है। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि आत्म–जागरूकता एक व्यक्ति को अपने चरित्र की ताकत और कमज़ोरियों की क़द्र करने की क्षमता प्रदान करता है। अपने बारे में जागरूक होने से तनाव पैदा करने वाले तत्वों की पहचान करने में मदद मिलती है। इस जानकारी का उपयोग तनाव से निपटने की प्रभावी प्रक्रिया तैयार करने में मददगार साबित होता है।

ओमप्रकाश एन एस
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु

मशहूर शिक्षाविद् स्टीफन कोवे के अनुसार – **"प्रत्येक मनुष्य के चार गुण होते हैं – आत्म–जागरूकता, विवेक, स्वतंत्र इच्छा और रचनात्मक सोच। ये हमें परम स्वतंत्रता देते हैं, यानी चुनने, प्रतिक्रिया देने व बदलने की शक्ति।"**

स्व–जागरूकता के लाभ :

- जब आप आत्म–जागरूकता विकसित करेंगे तो आपके अपने व्यक्तिगत विचार और व्याख्याएं बदलना शुरू हो जाएंगी। मानसिक स्थिति में यह बदलाव आपकी भावनाओं को भी बदलेगा और आपकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ाएगा जो समग्र सफलता प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण कारक है।
- आत्म–जागरूक होना उस जीवन के निर्माण का एक प्रारंभिक चरण है जो आप चाहते हैं। यह आपको यह पहचान करने में मदद करता है कि आपके जुनून और भावनाएं क्या हैं और आपका व्यक्तित्व जीवन में यह आपकी कैसे मदद कर सकता है।
- आप पहचान सकते हैं कि आपके विचार और भावनाएं आपको कहां ले जा रही हैं और अपेक्षित परिवर्तन कहां करें। एक बार जब आप अपने विचारों, शब्दों, भावनाओं और व्यवहार से अवगत हो जाएंगे तो आप अपने भविष्य की दिशा में बदलाव करने में सक्षम होंगे।
- जब आप आत्म–जागरूक होते हैं तो आप अपनी इच्छा और लक्ष्य को बेहतर रूप से समझ पाते हैं।
- यह आपको अपने कार्यों पर नियंत्रण रखने का भी अवसर प्रदान करता है ताकि आप वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए आवश्यक परिवर्तन कर सकें। इसमें आपकी भावनाओं, आपके व्यवहार या आपके व्यक्तित्व में परिवर्तन शामिल हो सकते हैं। जब तक आप इसे हासिल नहीं कर लेते, तब तक आपको उस दिशा में बदलाव करने में मुश्किल होगी, जिस दिशा में आपका जीवन आपको ले जा रहा है।

आत्म–जागरूकता कैसे विकसित करें और बढ़ाएं :

- आत्म–जागरूकता आपको अपनी ताकत का पूरा फायदा उठाने और अपनी कमज़ोरियों से निपटने में मदद करती है। आत्म–जागरूकता आपकी अपनी ज़रूरतों, इच्छाओं, असफलताओं, आदतों, और अन्य सभी चीज़ों को समझने की बात से संबंधित है जो आपको एक अद्वितीय व्यक्ति बनाता है। जितना अधिक आप अपने बारे में जानेंगे, उतना

ही बेहतर आप जीवन के परिवर्तनों को स्वीकार करेंगे। इससे हमें स्वयं में बदलाव लाने और हमारी क्षमताओं का विकास करने की शक्ति मिलती है। साथ ही ऐसे क्षेत्रों की पहचान भी होती है जहां हम सुधार करना चाहते हैं। लक्ष्यों को निर्धारित करने के लिए आत्म–जागरूकता अक्सर पहला कदम होता है।

- आत्म–जागरूकता के साथ आत्म–सुधार आता है। लेकिन, आपको खुद को बेहतर बनाने में दिलचस्पी रखने की ज़रूरत है। इस तरह आप के द्वारा उन कार्यों को करने की अधिक संभावना होगी जो आपको चुनौती दे सकते हैं और आपके कौशल को विकसित करने में मदद कर सकते हैं। यह नई संभावनाओं, अनुभवों और विकास के द्वार खोलता है।

- अपने आप को निष्पक्ष रूप से देखें। हालांकि, स्वयं को इस रूप में देखने की कोशिश करना एक बहुत ही कठिन प्रक्रिया होती है। स्वयं को निष्पक्ष रूप से देखने में सक्षम होते ही आप इस बात को जान जाएंगे कि खुद को स्वीकार कैसे करें और साथ ही भविष्य में खुद को बेहतर बनाने के तरीके खोज पाएंगे।

- उन चीजों की पहचान करने का प्रयास करें जो आपको लगता है कि आप करने में अच्छे हैं या जिन्हें आपको सुधारने की आवश्यकता है। उसी प्रकार, उन चीज़ों के बारे में भी सोचें जिन पर आपको गर्व है या ऐसी कोई उपलब्धि जो वास्तव में आपके पूरे जीवन में उल्लेखनीय है। अपने बचपन के बारे में सोचें और उस समय आपको किस बात से खुशी मिली और क्या बदल गया है और क्या वैसा का वैसा रहा है? परिवर्तन के कारण क्या हैं?

- दूसरों को आपके प्रति ईमानदार बने रहने के लिए प्रोत्साहित करें और यह जानने की कोशिश करें कि वे आपके बारे में कैसा महसूस करते हैं और जो वे कहते हैं उसे दिल से लें क्योंकि ईमानदारीपूर्वक कही गई बात सही होती है। अंत में, आप यह पाएंगे कि आपका खुद के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण विकसित हो रहा है।

अपने विचारों, लक्ष्यों व प्राथमिकताओं पर ध्यान दें :

- अपने विचारों, भावनाओं सहित अपनी सफलताओं और विफलताओं के प्रति ध्यान दें और उन पर आत्ममंथन करें।

इससे आपको जीवन में सार्थक रूप से आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। यह सोचने के लिए कुछ समय निकालें कि आप किस प्रकार के नेता हैं, आपके सहयोगियों पर आपके व्यक्तित्व का क्या प्रभाव है और वे आपको किस नज़रिए से देखते हैं और आपके प्रति क्या रवैया रखते हैं। इस बारे में अवश्य सोचें कि आपके लिए जीवन के मूल्य क्या हैं, आप अन्य लोगों की मदद करने के लिए क्या करते हैं, उन्हें किस प्रकार का समर्थन देते हैं और इस समय आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है।

- अपने लक्ष्यों, योजनाओं और प्राथमिकताओं पर ध्यान दें। अपने लक्ष्यों की योजना बनाएं ताकि वे विचारों के बलबूते चरण–दर–चरण प्रक्रिया में बदल जाएं। अपने बड़े लक्ष्य को छोटे–छोटे लक्ष्यों में विभाजित करें ताकि यह कम भारी लगे और इससे डटकर मुकाबला करते हुए सफलता हासिल कर सके।

- आप यह निर्धारित कर सकते हैं कि आपके विचार और भावनाएँ आपको कहाँ ले जा रहे हैं ताकि आप वे परिवर्तन कर सकें जो आपको करने की आवश्यकता है। जब आप अपने विचारों, शब्दों, भावनाओं और व्यवहार से अवगत होंगे, आपके भविष्य की दिशा में बदलाव संभव हो जाएगा।

ध्यान के अभ्यास के ज़रिए जागरूकता बढ़ाना :

- ध्यान का अर्थ, किसी भी विषय पर ध्यान केन्द्रित करके उसमें मन को एकाग्रचित्त करना होता है। अर्थात् ध्यान

आपके मन को जागरूक करने के ज़रिए अपनी जागरूकता में सुधार करने का अभ्यास है। अधिकांश प्रकार के ध्यान श्वास पर केंद्रित होते हैं।

- अपने विश्वसनीय मित्रों से अपने बारे में उनकी राय लें। हमें पता लगना चाहिए कि दूसरे व्यक्ति हमारे बारे में क्या सोचते हैं? हमें अपने साथियों की प्रतिक्रिया सुननी है और उन्हें आलोचनात्मक, ईमानदार व खुले दर्पण की भूमिका निभाने देना है। भले ही अपनी आत्म–जागरूकता बढ़ाने और खुद को बेहतर तरीके से जानने में काफी समय लगे, यह खुद को बेहतर बनाने में मदद करेगा।

निष्कर्ष :

अधिकांश लोगों का यह मानना है कि उनमें आत्म–जागरूकता की अच्छी समझ है, लेकिन तुलनात्मक पैमाने पर यह जानना सर्वाधिक युक्तिसंगत होगा कि दूसरों की तुलना में इस संबंध में आपकी क्या स्थिति है। यह महत्वपूर्ण है कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तिगत मूल्यों को जानें और उन पर ध्यान केंद्रित करें। जब हम अपने मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करेंगे तो हम वह हासिल करने की अधिक संभावना रखेंगे जिसे हम सबसे महत्वपूर्ण मानते हैं। उसी प्रकार, अपने विचारों, शब्दों, भावनाओं और व्यवहार से अवगत होने पर आपके भविष्य की दिशा में सकारात्मक बदलाव संभव हो जाएगा।

स्वयं के मूल्य की पहचान

एक आदमी ने जाकर भगवान से पूछा, 'जीवन का मूल्य क्या है, भगवान?' भगवान ने उसे एक पत्थर देते हुए कहा, 'इस पत्थर का मूल्य पता करो, लेकिन इसे किसी भी कीमत पर बेचो मत।' वह आदमी उस पत्थर को संतरा विक्रेता के पास ले गया और उससे पूछा कि इसकी कीमत क्या होगी। संतरा विक्रेता ने चमकदार पत्थर को देखा और कहा, 'आप 12 संतरे ले सकते हैं और उसके बदले मुझे पत्थर दे सकते हैं।' उस आदमी ने माफी मांगी और कहा कि भगवान ने उसे इसे बेचने से मना किया है। आगे उसकी मुलाकात एक सब्जी विक्रेता से हुई। 'इस पत्थर का क्या मूल्य हो सकता है?' उन्होंने सब्जी विक्रेता से पूछा। विक्रेता ने उस चमदार पत्थर को देखा और कहा, 'आलू की एक बोरी लो और मुझे पत्थर दो।' उस आदमी ने फिर से माफी मांगी और कहा कि वह इसे नहीं बेच सकता।

आगे चलकर वह एक आभूषण की दुकान में गया और पत्थर की कीमत पूछी। जौहरी ने पत्थर को एक लेंस के नीचे देखा और कहा, 'मैं आपको इस पत्थर के लिए रु.50 लाख दूंगा।' जब उस आदमी ने सिर हिलाया तो जौहरी ने कहा, 'ठीक है, ठीक है, रु.2 करोड़ ले लो, लेकिन मुझे पत्थर दे दो।' उस आदमी ने समझाया कि वह पत्थर नहीं बेच सकता। आगे उस आदमी ने एक कीमती पत्थर की दुकान देखी और विक्रेता से उस पत्थर की कीमत की पूछताछ की। जब कीमती पत्थर के विक्रेता ने बड़े माणिक को देखा तो उसने एक लाल कपड़ा बिछाया और उस पर माणिक रख दिया। फिर वह माणिक की चारों ओर चक्कर लगाता हुआ नीचे झुकते हुए उसे छूकर देखा और बहुत बारीकी से उसका मुआयना किया। 'आप यह अनमोल माणिक कहाँ से लाएं?', उसने पूछा। 'अगर मैं अपनी सारी पूंजी के साथ–साथ पूरी दुनिया भी बेच दूं, तो भी मैं इस अमूल्य पत्थर को नहीं खरीद पाऊंगा।'

स्तब्ध और भ्रमित, वह आदमी भगवान के पास लौट आया और वे सारी बातें बताई जो उसके साथ घटित हुई। 'अब मुझे बताइए, जीवन का मूल्य क्या है, भगवान?' भगवान ने कहा, 'संतरा बेचने वाले, सब्जी बेचने वाले, जौहरी और कीमती पत्थरों के विक्रेता से मिले जवाब हमारे जीवन की कीमत बताते हैं... हो सकता है कि तुम एक बेशकीमती पत्थर हो, अनमोल भी हो, लेकिन लोगों के लिए तुम्हारे मूल्य का आधार उनकी अपनी जानकारी का स्तर, तुम पर उनका विश्वास, तुमको स्वीकार करने के पीछे उनका मकसद, उनकी महत्वाकांक्षा और उनकी जोखिम लेने की क्षमता है। लेकिन डरो मत, तुम्हें कोई ऐसा व्यक्ति अवश्य मिलेगा जो तुम्हारे वास्तविक मूल्य को समझेगा। भगवान की नज़र में तुम बहुत कीमती हो। खुद का सम्मान करो, तुम अपने आप में विशिष्ट हो, अद्वितीय हो, तुम्हारी जगह कोई नहीं ले सकता!'

* * *

आलेख

म्यूचुअल फंड

म्यूचुअल फंड यह शब्द आज शेयर बाजार में निवेश कर रहे हर निवेशक के लिए अतिमहत्वपूर्ण है। आम निवेशक सीधे शेयर बाजार में निवेश करने की बजाये म्यूचुअल फंड के द्वारा निवेश करना बेहतर समझते हैं। म्यूचुअल फंड, जिसे हिन्दी में 'पारस्परिक निधि' कहते हैं, का अंग्रेज़ी नाम अधिक प्रचलित है। यह एक प्रकार का सामूहिक निवेश होता है। निवेशकों के समूह मिल कर स्टॉक, अल्प अवधि के निवेश या अन्य प्रतिभूतियों (सेक्यूरिटीज) में निवेश करते हैं। यूटीआई एएमसी भारत की सबसे पुरानी म्यूचुअल फंड कंपनी है।

म्यूचुअल फंड को 'पारस्परिक निधि' भी कहते हैं। यह एक प्रकार का समूह निवेश होता है जिसमें बहुत सारे निवेशक मिलकर फंड में पैसा लगाते हैं। इस फंड की देख रेख फंड प्रबंधक/ मैनेजर करता है और हानि–लाभ का हिसाब लगाता है। जमा की गई धनराशि को दूसरे प्रोजेक्ट, इक्विटी, मुद्रा बाजार, बांड व अन्य सिक्योरिटीज में निवेश कर दिया जाता है। म्यूचुयल फंड में हर निवेशक इकाइयों का एक मालिक होता है जो फंड के मल्कियत के हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है। हानि या लाभ होने पर सभी निवेशकों को बराबर बांटा जाता है। लाभ होने पर उनके पैसे बढ़ते हैं जबकि हानि होने पर उनके पैसे कम हो जाते हैं।

म्यूचुअल फंड का हिसाब–किताब म्यूचुअल फंड कंपनी रखती है। वह निवेशकों से पैसा एकत्रित करती है और उसे बाजार में निवेश करती है। सारा कार्य फंड मैनेजर ही करता है। निवेशक को कोई चिंता करने की जरूरत नहीं होती है। म्यूचुअल फंड में छोटे निवेशक ₹100 प्रति माह तक निवेश कर सकते हैं। यह पैसा उनके बैंक खाते से अपने आप कट जाता है। इस योजना को लेने के लिए उन्हें एसआईपी (सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) लेना होता है।

गुलशन पंवार
एकल खिड़की परिचालक
गुलाबगढ़ शाखा

म्यूचुअल फण्ड में निवेश करने के कुछ महत्वपूर्ण तरीके –

1. किसी भी म्यूचुअल फंड में लंबे समय के लिए नियमित पैसा लगायें तभी आप म्यूचुअल फंड में पैसा कमा पाएंगे। कम समय में अधिक मुनाफा कमाने के बारे में न सोचें।

2. सारा पैसा एक ही फंड में न लगाएं। अलग–अलग म्यूचुअल फंड में निवेश करें। डायवर्सिफाइड फंड में पैसा लगाएं। आप किसी म्यूचुअल फंड की वेबसाइट से सीधे निवेश कर सकते हैं। अगर आप चाहें तो किसी म्यूचुअल फंड एडवाइज़र की सेवा भी ले सकते हैं। अगर आप सीधे निवेश करते हैं तो आप म्यूचुअल फंड स्कीम के डायरेक्ट प्लान में निवेश कर सकते हैं. अगर आप किसी एडवाइज़र की मदद से निवेश कर रहे हैं तो आप रेगुलर प्लान में निवेश करते हैं।

3. किसी भी फंड में एकमुश्त रकम न लगाएं। थोड़ी–थोड़ी रकम सभी फंड में निवेश करें। इसका मुख्य कारण रिस्क को डायवर्सिफाइड करना है।

4. किसी भी फंड में पैसा लगाते समय पिछले 5 साल का रिकॉर्ड चेक करें। उसके बाद निवेश करें।

5. फंड में लंबे समय तक एक निश्चित राशि लगाते रहें। इसलिए आप वही पैसा म्यूचुअल फंड में लगाएं जो आपके पास अतिरिक्त हो, जो आप आसानी से लगा सकें। अपनी काम के आवश्यक पैसे को म्यूचुअल फंड में इन्वेस्ट न करें।

6. दोस्तों को देख कर किसी म्यूचुअल फंड में निवेश न करें। आप खुद यह जांच करें कि उस फंड ने (जिसमे आप पैसा लगाने की योजना बना रहे है) पिछले 5 सालों में कैसा परफॉर्मेंस दिया है।

7. म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय पहले यह निर्धारित करें कि कितने साल के लिए आपको निवेश करना है। यदि आप 1 से 2 साल के लिए निवेश करना चाहते हैं तो उसके लिए अलग म्यूचुअल फंड होते हैं। यदि आप 5, 7, 10 सालों के लिए निवेश करना चाहते हैं तो उसके लिए दूसरे म्यूचुअल फंडहोते हैं।

8. किसी भी म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय उससे जुड़े खर्चों के बारे में पता करें। एंट्री एग्जिट लोड, एसेट मैनेजमेंट चार्ज, एक्सपेंस रेशियो जैसे खर्चों का अच्छी तरह पता लगा लें। इन खर्चों की वजह से आपका मुनाफा कम हो सकता है। इसलिए पहले से ही इसके बारे में पता कर लें।

9. किसी म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय फंड हाउस और मैनेजर का रिकॉर्ड चेक करें। यह देखें कि फंड हाउस कितने समय से काम कर रहा है। उसकी स्कीमों का परफॉर्मेंस कैसा है। बाजार में उस फंड की साख कैसी है। उसे फंड मैनेज करने का कितना अनुभव प्राप्त है।

म्यूचुअल फंड के फायदे

1. **सुरक्षा** – बहुत से लोगों का मानना है कि म्यूचुअल फंड बैंक प्रोडक्ट्स और योजनाओं की तुलना में कम सुरक्षित होते हैं। पर यह सच नहीं है। म्यूचुअल फंड की निगरानी सरकारी संस्थाएं सेबी (भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड) करती है। वह म्यूचुअल फंड कंपनियों की विश्वसनीयता की जांच करती है। इसलिए म्यूचुअल फंड सुरक्षित होते हैं।

2. **टैक्स की बचत** – म्यूचुअल फंड में निवेश कर टैक्स की बचत की जा सकती है। हर साल ₹1.5 लाख तक म्यूचुअल फंडमें निवेश करके टैक्स की बचत कर सकते हैं।

3. **फंड मैनेजर की ज़िम्मेदारी** – म्यूचुअल फंड लेने के बाद आप निश्चिंत हो सकते हैं क्योंकि फंड को मैनेज करने की ज़िम्मेदारी फंड मैनेजर करता है। वह आपको बताता है कि किस फंड में निवेश करना चाहिए और कहां से पैसा निकाल लेना चाहिए। फंड मैनेजर का दायित्व होता है कि आपको अधिक से अधिक मुनाफा कमा कर दे।

4. **कम निवेश की सुविधा** – यदि आप बहुत अधिक निवेश नहीं करना चाहते तो आप कम निवेश भी कर सकते हैं। म्यूचुअल फंड में ₹100 प्रतिमाह के हिसाब से भी निवेश किया जा सकता है। इसलिए यह छोटे निवेशकों के लिए सही होता है। भारत में ₹500 से म्यूचुअल फंड शुरू करने के लिए लॉन्ग टर्म इक्विटी फंड एक अच्छा विकल्प है। यह ईएलएसएस यानी टैक्स सेविंग श्रेणी का म्यूचुअल फंड है। इसमें लो रिस्क लेवल और हाई रिटर्न मिलता है।

म्यूचुअल फंड से नुकसान

1. **लॉक इन पीरियड** – बहुत से म्यूचुअल फंड में 5 से 8 वर्ष का लॉक इन पीरियड होता है जिसमें आप योजना से बाहर नहीं निकल सकते हैं। यदि आप लॉक इन पीरियड से पहले ही अपना फंड निकालना चाहते हैं तो यह काफी खर्चीला होता है। समय से पहले पैसा निकालने पर आपको ब्याज भी नहीं मिलता है।

2. **अतिरिक्त शुल्क** – म्यूचुअल फंड मैनेजर और बाजार विशेषज्ञ के वेतन का खर्च निवेशकों द्वारा दिए गए धन से निकाला जाता है। इसलिए सभी निवेशकों को कुछ पैसा अतिरिक्त देना होता है।

3. **मुनाफा बंट जाना** – बहुत से लोग 7 से 8 म्यूचुअल फंड में पैसा लगाते हैं। इस तरह उनका मुनाफा भी बंट जाता है। ये फंड बाजार पर आधारित होते हैं। इसमें लाभ हो सकता है और हानि भी।

4. **विभिन्न म्यूचुअल फंड में पैसा लगाना –** इससे यह फायदा रहता है कि जोखिम की संभावना कम हो जाती है। क्योंकि आपका पैसा बहुत से फंड में लगा होता है। कुछ फंड अच्छा परफॉर्म करते हैं तो कुछ घाटे में चले जाते हैं।

निष्कर्ष :

म्यूचुअल फंड निवेश, निवेशकों के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वे छोटे निवेशकों से संसाधनों को एक साथ जोड़ते हैं, इस प्रकार वित्तीय बाजारों में भागीदारी बढ़ाते हैं। म्यूचुअल फंड छोटे निवेशकों को सूचित निर्णय लेने के लिए सेवाएं प्रदान करता है। अत: हम कहें कि म्यूचुअल फंड में निवेश क्यूं करें तो इसका मुख्य कारण म्यूचुअल फंड में आपके पैसे को अलग–अलग कंपनियों में लगाया जाता है। म्यूचुअल फंड में पैसा अलग–अलग शेयर और बांड में इन्वेस्ट किया जाता है। इसका फायदा यह है कि अगर किसी एक कंपनी में लगा पैसा दिक्कत में भी आ जाए तो बाकी जगह पर लगा हुआ पैसा उसे कवर कर ले। इससे आपका नुकसान नहीं हो पाए। म्यूचुअल फंड में निवेश करने से पहले निवेशकों को उसके नियम और शर्तें अच्छी तरह से पढ़ लेनी चाहिए क्योंकि म्यूचुअल फंड बाज़ार जोख़िमों के अधीन है।

अपनी छुपी हुई शक्ति को पहचानो !

बहुत समय पहले एक गाँव में एक किसान रहता था। वह सुबह जल्दी उठ जाता था और साफ पानी लेने के लिए दूर के झरनों में जाता था। इस काम के लिए वह अपने साथ मिट्टी के दो बड़े घड़े ले जाता था जिसे वह अपने कंधे पर दोनों तरफ लटकी हुई छड़ी से बांधता था। एक घड़ा कहीं से टूटा हुआ था और दूसरा ठीक था। इस वजह से किसान घर पहुंचने तक डेढ़ घड़ा पानी ही बचा पाता। दो साल से ऐसा ही चल रहा था। जहां सही बर्तन को इस बात का गर्व था कि सारा पानी घर पहुंच जाता है और उसमें पानी की कोई कमी नहीं होती है, वहीं दूसरी तरफ टूटे हुए घड़े को इस बात पर शर्म आती थी कि वह आधा पानी ही ला पाता है। किसान की मेहनत बेकार जाती है। टूटा हुआ घड़ा यह सब सोचकर बहुत परेशान होने लगा और एक दिन उसने इस परेशानी को ज़ाहिर किया। उसने किसान से कहा, ''मैं खुद पर शर्मिंदा हूँ और आपसे माफी मांगना चाहता हूँ।'' ''क्यों? किसान ने पूछा, तुम्हें किस बात पर शर्म आती है?'' टूटे हुए घड़े ने उदास होकर कहा, ''शायद आपको पता न हो, लेकिन मेरे एक हिस्से में छेद है और इस वजह से पिछले दो सालों से मैं आधा पानी ही ला पाया हूँ और यह मुझमें एक बहुत बड़ी कमी है और इस वजह से आपकी मेहनत बर्बाद हो रही है।'' टूटे हुए घड़े से यह सुनकर किसान को थोड़ा दु:ख हुआ और उसने कहा, ''कोई बात नहीं, मैं चाहता हूँ कि तुम आज लौटते समय रास्ते में नज़र आने वाले सुंदर फूलों को देखो।'' टूटे हुए घड़े ने वैसा ही किया। वह रास्ते भर सुंदर फूल को देखता रहा। ऐसा करने से उसका दु:ख दूर हो गया, लेकिन जब तक वह घर पहुंचा तब तक उसके अंदर से आधा पानी गिर चुका था। उसने किसान का दिल जीत लिया था, किंतु किसान से फिर से माफी मांगने लगा। किसान ने कहा, ''शायद तुमने ध्यान नहीं दिया। रास्ते में सारे फूल तुम्हारी तरफ थे। दूसरी तरफ एक भी फूल नहीं था। ऐसा इसलिए क्योंकि मुझे हमेशा से पता था कि तुम में क्या कमी है और मैंने इसका फायदा उठाया। मैंने तुम्हारी तरफ सड़क पर रंग–बिरंगे फूलों के बीज बोए थे। तुमने उन्हें रोज़ थोड़ा–थोड़ा करके पानी पिलाया और पूरी सड़क को इतना खूबसूरत बना दिया। आज तुम्हारी वजह से मैं और अन्य लोग इन खूबसूरत फूलों को देख सकते हैं। इन फूलों को देखकर हर कोई खुश होता है और अपने दु:ख को भूल सकता है। लोग इन खूबसूरत फूलों को मंदिर में चढ़ाते हैं और मन की शांति प्राप्त करते हैं और वे इन खूबसूरत फूलों को घर ले जाते हैं और अपने घर को खूबसूरत बनाते हैं। यदि तुम टूटे नहीं होते, तो क्या तुम्हें लगता है कि यह संभव होता? यह मत सोचो कि तुम बेकार हो। तुम बेकार नहीं हो, तुम योग्य हो, क्योंकि तुम हज़ारों लोगों की खुशी का कारण बन गए हो।''

अगर हम अपने जीवन की ओर ध्यान दें तो हम देखेंगे कि कभी–कभी हम खुद को बेकार और बेबस महसूस करने लगते हैं। लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि हम सभी में कुछ न कुछ कमियां और खामियां होती हैं। लेकिन ये कमियां और खामियां हमें खास बनाती हैं। अगर हम सकारात्मक तरीके से सोचें तो हम इन कमियों को ताकत में बदल सकते हैं। किसान की तरह हमें भी हर किसी को जैसा है उसे उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए और उसकी अच्छाइयों पर ध्यान देना चाहिए और जब हम ऐसा करते हैं तो टूटा हुआ बर्तन भी अच्छे बर्तन से अधिक मूल्यवान हो जाएगा।

आलेख

राजभाषा कार्यान्वयन में अनुवाद की भूमिका

भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने विचारों को दूसरों से अभिव्यक्त करता है। यह एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य को मानवता प्रदान करती है और उसका सम्मान तथा यश बढ़ाती है। जिसे भाषा का वरदान प्राप्त होता है उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती है और वह कीर्ति का अधिकारी भी बनता है। किंतु, इसी भाषा में विकृति आने पर मनुष्य निंदा और अपयश का भी भागी बनता है। अत: भाषा का प्रयोग बहुत सोच–विचार कर करना चाहिए, इसलिए राजकीय कार्यों में पूर्ण सोच–विचार के बाद ही उपयुक्त भाषा का प्रयोग करने की परंपरा रही है।

मोहम्मद इमरान अंसारी
प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, अलीगढ़

राज्य या प्रशासन की भाषा को राजभाषा कहते हैं। इसके माध्यम से सभी प्रशासनिक कार्य संपन्न किए जाते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार उस भाषा को राजभाषा कहते हैं जो सरकारी कामकाज के लिए स्वीकार की गई हो और जो शासन तथा जनता के बीच आपसी संपर्क के काम आती हो। जब से प्रशासन की परंपरा प्रचलित हुई है तभी से राजभाषा का प्रयोग भी किया जा रहा है। प्राचीन काल में भारत में संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश आदि भाषाओं का राजभाषा के रूप में प्रयोग होता था। समय के साथ इन भाषाओं का स्थान फारसी और अरबी भाषाओं ने ले लिया। आज़ादी के उपरांत हिंदी भाषा का प्रयोग राजकाज में किया जाने लगा। आज भी हिंदी अथवा हिंदी–फारसी द्विभाषी रूप में जारी किए गए फरमान बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। यह इस बात का द्योतक है कि हिंदी राजकाज की भाषा में सदैव सक्षम रही है। स्वतंत्रता संग्राम के साथ–साथ हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने भारतीय भाषाओं पर, विशेषकर हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित करने का प्रयास प्रारंभ किया। इस राष्ट्रीय जागरण के परिणामस्वरूप, हिंदी का उत्तरोत्तर प्रसार होने लगा और यह मत व्यक्त किया जाने लगा कि देश के अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाने के कारण हिंदी को ही भारत की राजभाषा बनाया जाना चाहिए।

वर्ष 1949 में यह तय किया गया कि सरकारी कामकाज में हिंदी का उपयोग किया जाएगा, यानी हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया। प्रशासन में राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रगामी प्रयोग पर ज़ोर दिया गया। इसके फलस्वरूप, शिक्षा और प्रशासन में भारतीय भाषाओं को नई भूमिका मिली। किसी भी देश की उन्नति में उस देश की मुख्य भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है जिसकी अनदेखी करना असंभव है। इसका अर्थ यह है कि देश के विकास के साथ–साथ अपनी भाषा का भी महत्व है। विकास चाहे प्रौद्योगिकी, व्यापार, वित्त या अन्य किसी भी क्षेत्र का हो, उसमें भाषा का प्रवेश अवश्य होता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आजकल राजभाषा हिंदी अपनी सीमाओं से बाहर आ चुकी है। नई प्रौद्योगिकी वैश्विक विपणन तंत्र और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की भाषा बन रही है। इस प्रक्रिया को तेज गति देना बेहद ज़रूरी है। राजभाषा से एक नई वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी बदल रही है और विकास की भाषा बन रही है।

विकास की अनवरत यात्रा में अनुवाद का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य हो गया है। अनुवाद और राजभाषा दोनों ही क्षेत्र का काफी विकास हुआ है और अब अनुवाद और राजभाषा को एक ही अध्ययन का विषय माना जा रहा है। आज पूरे विश्व में तेजी से बदलाव आ रहा है। इस बदलते परिवेश में अनुवाद के संदर्भ में अनेक बिंदुओं का विकास अब ज़रूरी हो गया है जिसके कारण अनुवाद की भूमिका काफी बढ़ जाती है।

अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की 'वद्' धातु से हुई है। अनुवाद का शाब्दिक अर्थ है 'पुन: कथन' अर्थात् किसी कही गई बात को फिर से कहना। यह भी कहा जा सकता है कि एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में ज्यों का त्यों प्रकट करना ही अनुवाद है। अनुवाद एक साहित्यिक विधा है और वह मौलिक साहित्य रचना की कोटि में नहीं आती। मूलत: किसी एक भाषा में व्यक्त विचारों को

दूसरी भाषा में व्यक्त करना बड़ा ही कठिन कार्य है क्योंकि प्रत्येक भाषा का अपना स्वरूप होता है। उसकी अपनी निजी ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य तथा अर्थमूलक विशेषताएं होती हैं। अनुवाद में दो भाषाएं होती हैं। इन दोनों भाषाओं को अनुवाद विज्ञान में स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की संज्ञा दी गई है। जिस भाषा की सामग्री अनूदित होती है वह स्रोत भाषा कहलाती है और जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है वह लक्ष्य भाषा कहलाती है। कभी–कभी स्रोत भाषा का कथ्य लक्ष्य भाषा में अपेक्षाकृत कहीं विस्तृत, कहीं संकुचित और कहीं भिन्नरूपी हो जाता है।

कार्यालयों में अनुवाद का प्रयोग विशेष प्रयोजन के लिए होता है। राजभाषा हिंदी के ज़रिए हमारा प्रयास भारत के सभी प्रांतों, अंचलों और जनपदों के बीच सौहार्द्र, सामंजस्य, परस्पर स्नेह से एक सूत्र में बांधने का होना चाहिए। राजभाषा के प्रयोग का अधिकाधिक अवसर तभी मिलेगा जब उसमें सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों का समावेश हो। अनुवादक और अनुवाद की सार्थकता तभी है जब प्रवाहमय भाषा का प्रयोग किया जाए। भाषा में सदैव नए प्रयोग चलते रहते हैं। हिंदी भाषा में भी बाज़ारवाद, वैश्वीकरण, भौगोलिक और भूमंडलीकरण के कारण कई नए प्रयोग किए जा रहे हैं। अनुवादक को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि इन परिवर्तनों को अपनी सहज प्रवृत्ति के रूप में ढाला जाए।

अक्सर यह सुनने में आता है कि राजभाषा हिंदी का भाषिक स्वरूप रुचिकर नहीं है। इसका मुख्य कारण भाषा की प्रकृति तथा अनुवाद की सीमाएं हैं। यूं तो एक सफल अनुवादक किसी भी रचना का ऐसा अनुवाद प्रस्तुत कर सकता है कि लगेगा ही नहीं कि वह एक अनूदित कार्य है। परंतु राजभाषा के अनुवाद के प्रकरण में यह पूरी तरह से संभव नहीं है क्योंकि इसमें आम बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्दों के अलावा कई पारिभाषिक शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है। इससे राजभाषा की संप्रेषणीयता में कमी आती है। जिस सामग्री में पारिभाषिक शब्दावली की भरमार हो, वह सामान्य पाठक के लिए मुश्किल उत्पन्न करती है। ऐसे में राजभाषा हिंदी चाहे – वो प्रशासन की, विज्ञान की, वित्तीय क्षेत्र की भाषा हो – कृत्रिम भाषा की ही श्रेणी में गिनी जाती है।

मोटे तौर पर यह देखा गया है कि साहित्यिक बिरादरी राजभाषा हिंदी को स्वीकार करने को तैयार नहीं है। इस संदर्भ में यह कहना बहुत आवश्यक है कि साहित्यिक भाषा का रचनात्मक सौष्ठव राजभाषा हिंदी को इसलिए प्राप्त नहीं हो रहा क्योंकि उसकी

असंप्रेषणीयता उसमें व्यापक पैमाने पर प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों के कारण है। सरकारी कार्यालयों में साहित्यिक और व्याकरणसम्मत हिंदी का आग्रह रखकर हम इसका विकास नहीं कर सकेंगे क्योंकि शब्दावली में न तो भावनाओं का प्रवाह होता है और न ही विचारों की प्रबलता। यह मात्र माध्यम बनने की ही नियति होती है। हालांकि, साहित्य के अलावा ज्ञान–विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में भी हिंदी का इतिहास कमज़ोर नहीं रहा है, अपितु ज्ञान–विज्ञान का हस्तांतरण मजबूत भाषा की विशेषता रही है। अनासक्त तटस्थता यहां के अनुवाद का मूल मंत्र है।

यह एक सर्वसम्मत सत्य है कि सहज प्रवृत्ति से ही सहज भाषा निर्मित होती है तथा सहज भाषा ही सर्वग्राह्य होती है। अनुवादक को यह ध्यान रखना चाहिए कि हिंदी भाषा को इतना बोझिल और कृत्रिम न बना दिया जाए कि इसकी सहजता ही नष्ट हो जाए। प्रचलित और जनसाधारण की समझ में आने वाली व्यवहार कुशल हिंदी ही सर्वग्राह्य हो सकती है। यह पूर्णतः अनुवादक पर निर्भर करता है कि वह जिस भाषा से और जिस भाषा में अनुवाद कर रहा है, उन भाषाओं की प्रकृति पर उसका कितना बोध है और उन भाषाओं की अनुभूतियों में वह कितनी तारतम्यता कायम रख सकता है।

एक सफल अनुवादक वही होता है जो अनूदित कृति में भी मूल कृति की नैसर्गिक अनुभूतियों को अपरिवर्तित रखे। अनुवाद करते समय स्त्रोत भाषा की रचना के परिवेश और प्रसंग को समझकर ही अनुवादक को लक्ष्य भाषा में अनुवाद करना चाहिए। अनुवाद यांत्रिक प्रक्रिया नहीं अपितु मौलिकता को स्पर्श करता हुआ कृतित्व है। उसके एक छोर पर मूल लेखक होता है तो दूसरे छोर पर अनुवादक। इन दोनों के बीच है अनुवाद की प्रक्रिया । अनुवाद कला

भाषा विज्ञान की एक विशिष्ट शाखा है जिसके आधार पर अनूदित कृति को कसौटी पर कसा जाता है। अनुवाद एक ऐसी भाषिक प्रक्रिया है जिसमें लेखक की अभिव्यक्ति का रूपांतरण किया जाता है। इसे हम भिन्न भाषा में मूल विषय की पुनरुक्ति कह सकते हैं।

अनुवादक को अनुवाद की प्रक्रिया में द्विभाषी होना आवश्यक है। दोनों भाषाओं का समुचित ज्ञान न होने पर अनुवादक विषय के साथ न्याय नहीं कर सकता। यदि वह भाषाशास्त्र का कुशल अध्येता हो तो निस्संदेह वह सफल अनुवादक सिद्ध हो सकता है। अनुवाद करते समय अनुवादक कभी–कभी उपयुक्त शब्द के चुनाव में कठिनाई का अनुभव करता है। भाषा संस्कृति से जुड़ी होती है और हर संस्कृति की अपनी–अपनी विशेषताएं होती हैं। उन विशेषताओं को अभिव्यक्त करने के लिए विशेष शब्द भी होते हैं। दूसरी भाषाओं में ऐसे विशिष्ट शब्दों के लिए प्रतिशब्द प्राप्त हो जाए यह आसान नहीं होता। अनुवादक के समक्ष पर्यायवाची शब्दों में से यथायोग्य शब्द का चयन करना भी कष्टसाध्य होता है। व्यवहारत: सभी पर्यायों में निकटता तो होती है पर अर्थ की समानता कम होती है। ऐसी स्थिति में वह उपयुक्त और निकटतम शब्द का चुनाव करता है। इसी तरह अनुवादक के लिए वाक्य विज्ञान की ओर भी ध्यान देना आवश्यक हो जाता है। इसके अंतर्गत वह उसके पदबंध और उपवाक्य पर अपना ध्यान विशेष रूप से केंद्रित करता है। प्रत्येक भाषा का अपना गठन होता है, उसकी अपनी वाक्य रचना होती है जो उस भाषा की प्रकृति के अनुकूल होती है। अंग्रेज़ी की वाक्य रचना का हिंदी की वाक्य रचना पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है, पर भारतीय भाषाओं की प्रवृत्ति लगभग समान है। अतएव, दो भारतीय भाषाओं में अनुवाद करते समय इस दृष्टि से कठिनाई नहीं होती। जबकि अंग्रेज़ी वाक्यांश का हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद करते समय अधिकांश अनुवादक अंग्रेज़ी वाक्य संरचना का अनुकरण करते हैं जिससे अनुवाद कृत्रिम सा लगता है। यहां सजीवता और स्वाभाविकता बनाए रखने के लिए मूल भाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार लिखना अधिक श्रेयस्कर है।

अनुवादक वस्तुत: अभिव्यक्ति का अनुवाद करता है, शब्द का नहीं। यह निर्विवाद सत्य है कि अनुवाद लेखन से कहीं अधिक कठिन कार्य है। मूल लेखक जहां अपने विचारों की अभिव्यक्ति में स्वतंत्र होता है, वही अनुवादक भाषा के विचारों को दूसरी भाषा में उतारने में अनेक तरह से बंधा होता है। उन दोनों भाषाओं की सूक्ष्म जानकारी के अतिरिक्त विषय की तह तक पहुंचने की क्षमता तथा अभिव्यक्ति की पूर्णता अच्छे अनुवादक के लिए अपेक्षित है और अच्छे अनुवाद का लक्षण भी है। कार्यालयीन अनुवाद करते समय यदि एक अनुवादक इन तथ्यों को ध्यान में रखें तो निश्चय ही वह अनुवाद में दक्ष हो सकता है और यथासंभव त्रुटिरहित अनुवाद करने में सक्षम हो सकता है।

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

संवैधानिक उपबंधों के अनुपालन में केंद्रीय सरकार के हिंदी न जानने वाले कर्मचारियों को हिंदी सिखाने का कार्य सर्वप्रथम शिक्षा मंत्रालय द्वारा जुलाई, 1952 में प्रारंभ किया गया। सन् 1960 में हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण अनिवार्य किया गया। सन् 1974 से केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों तथा उसके संबद्ध व अधीनस्थ कार्यालयों के कर्मचारियों के अतिरिक्त केंद्रीय सरकार के स्वामित्व अथवा नियंत्रणाधीन निगमों, निकायों, कंपनियों, उपक्रमों, बैंकों आदि के कर्मचारियों के लिए भी हिंदी भाषा, हिंदी टंकण तथा हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण प्राप्त करना अनिवार्य कर दिया गया। सन 1975 में गृह मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग की स्थापना हुई और हिंदी शिक्षण योजना को राजभाषा विभाग के अधीन कर दिया गया।

हिंदी शिक्षण योजना के दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई एवं गुवाहाटी में पाँच क्षेत्रीय कार्यालय हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम पूर्णकालिक केंद्रों के साथ-साथ अंशकालिक केंद्रों पर भी संचालित किए जा रहे हैं।

साभार - राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

कविता

माँ के गुज़र जाने पर

प्रकाश माली
प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, चंडीगढ़

माँ के गुज़र जाने पर
गाँव से एक कॉल आने पर
मैं जो दूर शहर में अपना भविष्य गढ़ रहा था ।
माँ के अरमान पूरे करने के लिए पढ़ रहा था ।।

मुझे बतलाया गया कि
जल्दी से घर आ जाओ
मैंने पूछा क्या हुआ परसों ही तो घर से आया हूँ ।
माँ को दवा दिलाकर सही सलामत छोड़ आया हूँ।।

मेरा संशय गहराता जा रहा था ।
जिसका डर था वही होने जा रहा था।
मेरे ज़ोर देने पर हक़ीक़त बयाँ कर दी गई।
बोले कि माँ इस संसार से रुख़्सत हो गई।।

मैं स्तब्ध नि:शब्द नि:सोच हो गया।
लगा उस पल रवि का रथ अचल हो गया ।।
ऐसा लगा मेरे जीवन–साम्राज्य का राजकोष लुट गया।
निधन माँ का हुआ और मैं निर्धन हो गया।।

बदहवास–सा मैं ज्यों–त्यों घर पहुँचा।
माँ को छुआ तो लगा माँ बोली।
बेटा! मैं तेरे ही आने का इंतज़ार कर रही थी।
इन यमदूतों से कुछ देर और रुकने का अनुरोध कर रही थी।।

माँ बोली बेटा तू रोना मत!
एक दिन तो जाना ही है, शोक करना मत।
बस एक ही वादा करो, छोटे भाई को न डांटा करना।
वह सबसे छोटा है, उसका भरपूर ख्याल रखना।।

सब भाई स्नेह से रहना।
बातों–बातों पर कभी न झगड़ा करना।।
जो भी दु:ख आये उन्हें मिलकर सहना।
सब सुखों को एक–दूसरे के साथ साझा करना।

मैं आशीर्वाद बनकर हर पल तुम्हारे साथ रहूँगी।
अपने आंचल के साये को तुम्हारा कवच करूँगी।।
अब तुम मुझे जाने दो यमदूत तकाज़ा कर रहे हैं।
बहुत देर हो जाने का हवाला दे रहे हैं।।

यह कहकर माँ चली गई पर अपनी सीखों की सूची थमा गई ।।
मुझे याद है बचपन में माँ हम सबसे कहा करती थी।
बेटा! किसी के सोने को, अपने लिए मिट्टी समझना।
नियति तो बदल जाती है, पर नीयत मत बदलना ।।

अपने आँगन से किसी को खाली हाथ न जाने देना ।
किसी क्षुधातुर को घर से भूखे पेट न जाने देना ।।
उनकी ये सब सीखें अब मेरे जीवन की पूँजी हैं ।
जिन पर चलकर ही अब घर में खुशियाँ गूँजी हैं ।।

पर माँ की कमी हमेशा मन में खटकती है।
माँ फिर से मुझे मिल जाए मन की हर चाह मचलती है ।।
अब भी कुछ बातों को सिर्फ माँ को बताने मैं घर की ओर दौड़ता हूँ।
घर पहुँच कर मैं माँ को घर के हर कोने में टटोरता हूँ ।।

हर किसी से मैं,
माँ का पता पूछता हूँ ।
सभी नि:शब्द हो माँ की तस्वीर की ओर इशारा कर देते हैं ।
और मेरे ज़हन में माँ के गुज़र जाने का ज़ख्मी इल्म भर देते हैं ।।

आलेख

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता श्रृंखला :

'ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता' श्रृंखला की इस चौथी कड़ी में हम, भारत में 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' हासिल करने वाले कन्नड़ भाषा के प्रसिद्ध कवि श्री दत्तात्रेय रामचंद्र बेंद्रे की यहां जीवनी का संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं। उन्हें सम्मान सहित कन्नड़ के 'वर कवि' कहा जाता है। दत्तात्रेय रामचन्द्र बेंद्रे कन्नड़ भाषा के सर्वाधिक प्रबुद्ध व प्रसिद्ध कवि थे। आम तौर पर श्री दत्तात्रेय रामचंद्र बेंद्रे को 'द रा बेंद्रे' के नाम से जाना जाता है। उन्हें 20वीं सदी का सबसे श्रेष्ठ कन्नड़ गीत कवि माना जाता है और कन्नड़ साहित्य के इतिहास में महानतम कवियों में से एक है। बेंद्रे ने देसी कन्नड़ के अपने मूल उपयोग के माध्यम से कन्नड़ साहित्य और आधुनिक कन्नड़ कविता में एक नया मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने कन्नड़ काव्य को सम्माननीय ऊँचाई दिलवाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। उन्होंने कन्नड़ के अलावा, मराठी साहित्य के प्रति भी उल्लेखनीय योगदान दिया है। 1932 में उनका प्रथम कविता संग्रह प्रकाशित होने से पूर्व ही समाज ने उन्हें एक कवि के रूप में अंगीकार कर लिया था। दत्तात्रेय जी के विशिष्ट योगदान को देखते हुए उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' (1958) और 'पद्मश्री' (1968) भी प्रदान किया गया था।

दत्तात्रेय रामचंद्र बेंद्रे
(13 जनवरी 1896 – 26 अक्तूबर 1981)

जन्म तथा शिक्षा :

दत्तात्रेय रामचन्द्र बेंद्रे का जन्म 13 जनवरी, 1896 को कर्नाटक के धारवाड़ शहर में मराठी चितपावन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वह रामचंद्रभट्ट और पार्वतीबाई के सबसे बड़े पुत्र थे। उनके बचपन का अधिकांश समय अभावों में व्यतीत हुआ था। जब वे मात्र बारह साल के थे, तभी उनके पिता का निधन हो गया था। इनके पिता और साथ ही दादा भी संस्कृत साहित्य के विद्वान व्यक्ति रहे थे। बेंद्रे ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा धारवाड़ में ही अपने चाचा की मदद से प्राप्त की थी। उन्होंने अपनी हाई स्कूल की परीक्षा सन 1913 में पास की। कन्नड़ भाषा के साथ–साथ अन्य कई भाषाओं के लिए भी अपना योगदान देने वाले दत्तात्रेय रामचन्द्र बेंद्रे का 26 अक्तूबर, 1981 को महाराष्ट्र में निधन हो गया।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा :

बेंद्रे ने 1919 में राणेबेन्नुरु में लक्ष्मीबाई से शादी की। उनके नौ संतान थीं। बेंद्रे ने अपने व्यवसायिक जीवन का प्रारम्भ 'विक्टोरिया हाई स्कूल', धारवाड़ से बतौर एक अध्यापक के रूप में किया। उन्होंने 'डी.ए.वी. कॉलेज', शोलापुर में 1944 से 1956 तक एक प्रोफ़ेसर के रूप में भी कार्य किया। इसके बाद वे धारवाड़ में 'ऑल इण्डिया रेडियो' के सलाहकार भी बने। दत्तात्रेय रामचन्द्र बेंद्रे को उत्तराधिकार में दो संपदाएँ मिली थीं– 'संस्कारिता' और 'विद्याप्रेम'। 'बालकांड' शीर्षक कविता में उन्होंने अपने बाल्यकाल के दिनों की कुछ छवियाँ उकेरी हैं। आस–पास के किसी भी घर में संपन्नता न थी, फिर भी सब ओर एक जीवंतता थी। सभी प्रकृति के 'हंसी' और 'रोष' के साथ बंधे हुए थे। उसी के ऋतु–रंगों और पर्वों के साथ तालबद्ध थे। सामाजिक या पारिवारिक हर कार्य के साथ गीत जुड़े रहते थे। भक्त व भिखारी, स्वांगी और फेरी वाले तक अपने–अपने गीत लिए आते और इन गीतों की रंगारंग भाषा उनकी लयों की विविधता दत्तात्रेय रामचन्द्र के बाल मन पर छा जाती। बेंद्रे की पहली प्रकाशित कविता तुत्तूरी (तुरही) थी।

उल्लेखनीय कार्य और उपलब्धियां :

प्रारंभ से ही उनके आगे यह समस्या रही कि किस प्रकार लोक समाज से मनोभावों का अपनी निजी बौद्धिक और आध्यात्मिक अनुभूतियों के साथ ताल–मेल बैठाया जाये। चिंतन और भावानुभूति, वस्तुपरक और आत्मपरक विषय, दोनों को अपनी रचनाओं में समायोजित करने के कारण बेंद्रे के काव्य को कुछ आलोचकों ने बौद्धिक काव्य का नाम दिया है। यह सच है कि उनकी कितनी ही कविताएँ बौद्धिक प्रगीत हैं, जबकि अन्य सबके विषय आध्यात्मिक हैं या रहस्यवादी। किंतु, बेंद्रे न रोमांसवादी थे और न ही प्रतिबद्धता के कवि। वह एक संपूर्ण कवि थे, जिन्होंने युग के चेतना बिंदु के साथ स्वंय को जोड़ा। वह ऐसे कवि थे, जिन्हें भाषा व

कर्नाटक के धारवाड़ शहर में स्थित द.रा. बेंद्रे का घर

कर्नाटक के धारवाड़ शहर में स्थित 'बेंद्रे भवन' के नाम से मशहूर द.रा. बेंद्रे का घर

अभिव्यक्ति पर इतना अधिकार था कि जटिल विचार–बोध और अनुभूति को भी प्रत्यक्ष कर दें।

बहुत पहले से, बेंद्रे ने अपनी कविता को 'अंबिकातनयदत्त' के रूप में प्रकाशित किया। 1943 में, बेंद्रे को उनके 1964 के कविता संग्रह, नाकुतंती ('चार तार') के लिए भारत के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार 'ज्ञानपीठ' से सम्मानित किया गया था। उडुपी के अदमुरु मठ द्वारा कर्नाटक के 'कविकुल तिलक' (कन्नड़ कवियों के बीच ताज–गहना) के रूप में पहचाने जाने वाले, उन्हें जादुई कविता बनाने की उनकी क्षमता के लिए 'काव्य गारुड़िगा' (कवि–जादूगर) भी कहा जाता है। उन्हें 1968 में 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया और 1969 में उन्हें साहित्य अकादमी का 'फेलो' (साथी) बनाया गया।

'नाकुतंती', (चार तार) कवि दत्तात्रेय रामचन्द्र बेंद्रे का एक कविता संग्रह है, जिसमें 44 कविताएँ हैं। इनमें से छः का संबंध समकालीन लेखकों के प्रति उनके अपने नाते और जनतंत्र के वास्तविक अभिप्राय से है। शेष कविताओं में चिंतन और भावनाओं की एक विलक्षण संगति देखने को मिलती है। 'नाकुतंती' कविता में कवि के व्यक्तित्व के चारों पक्षों, 'मैं', 'तुम', 'वह' और 'कल्पनाशील आत्मसत्ता' का वर्णन हुआ है। ये चार पक्ष ही कवि के व्यक्तित्व का चौहरा ढांचा है, और चार के इसी मूलभूत तत्व को कवि ने अपनी अनुभूति के सभी आध्यात्मिक और सौंदर्यात्मक क्षेत्रों में पहचाना। कविता की सृजन–प्रक्रिया विषयक छः सॉनेटों (sonnets) में बेंद्रे ने कविता के चार मूल तत्त्व गिनाए हैं– 'शब्द', 'अर्थ', 'लय' और 'सहृदय'। संग्रह की एक और कविता में प्रभावपूर्ण बिंबों के द्वारा कवि ने वाकशक्ति के चारों रूपों – 'परा', 'पश्यंती', 'मध्यमा' और 'वैखरी' का वर्णन किया है। बेंद्रे की सौंदर्य विषयक परिकल्पना के भी चार पक्ष हैं– 'इंद्रियगत', 'कल्पनागत', 'बुद्धिगत' और 'आदर्श', जो उनकी कविताओं में यथास्थान आए हैं।

उनके द्वारा रचित 'अरलु–मरलु' नामक कविता–संग्रह के लिये उन्हें सन् 1957 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' और 1973 में साहित्य का सर्वोच्च सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। बेंद्रे ने मराठी में कविता और गद्य भी लिखा जिसके लिए 1965 में उन्हें 'केलकर' पुरस्कार हासिल हुआ। मैसूर विश्वविद्यालय ने उन्हें 1966 में मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की और 1968 में कर्नाटक विश्वविद्यालय ने भी उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की। 1968 में उन्हें भारत सरकार से 'पद्मश्री' प्रदान किया गया। काशी विद्यापीठ ने उन्हें 1976 में अपनी तीसरी मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की। उन्होंने, 1943 में कर्नाटक राज्य के शिवमोग्गा शहर में आयोजित 27वें साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता की। 1968 में उन्हें 'साहित्य अकादमी' की फेलोशिप प्रदान की गई।

बेंद्रे एक सदाचारी कवि है जिन्होंने 'इलिदु बा ताई इलिदु बा', 'मूडल मनेया मुत्तिन नीरिन एरकावा होइदा' जैसी कविताओं की रचना की हैं जो उत्साह को जगाता है और जीवन को सुकून देती है। उनकी उल्लेखनीय रचनाओं में कहानी–संग्रह, कविताएं, नाटक आदि शामिल हैं। उनके द्वारा कन्नड़ में रचित कविताओं में 'सखीगीते' 'नाड़लीले', 'कन्नड़ मेघदूत', 'गंगावतारणा', 'अरलु–मरलु', 'नाकुतंती' आदि अत्यंत लोकप्रिय हैं। कन्नड़ में उनके द्वारा रचित कई कविताओं ने फिल्मों और लोक–गीतों के रूप में भी उभरकर सामने आए जो अत्यंत लोकप्रिय बनें।

आलेख

समीक्षा बैठक

बात जुलाई 2019 की है जब मैं अधिकारी थी और बतौर शाखा प्रमुख मैंने पहली बार तिमाही शाखा समीक्षा बैठक में भाग लिया था। बैठक से लौट कर पिता जी से अपना अनुभव साझा कर रही थी जो कि खुद एक रिटायर्ड बैंक मैनेजर हैं। बातों ही बातों में मैंने उनसे पूछ लिया कि "पिता जी क्या आपकी भी समीक्षा बैठक होती थी..." सुनकर वो मुस्करा उठे जैसे शायद उन्हें कोई घटना याद आ गई हो और कहने लगे – "क्यों नहीं होती थी बेटा...!! होती थी, पर हर छमाही के बाद होती थी और बेस्ट परफॉर्मर्स को पुरस्कृत भी किया जाता था।" फिर मैंने कहा कि "आप भी मुझे बतौर शाखा प्रमुख अपनी समीक्षा बैठक का कोई अच्छा सा तजुर्बा बताइए ना... जो आप को आज तक याद है।"

पूजा रानी
प्रबंधक
जलालाबाद शाखा

पिता जी कहने लगे, "मुझे आज भी याद है अपनी वो पहली समीक्षा बैठक जब मुझे बतौर शाखा प्रमुख ज्वाइन किये मात्र 15 दिन ही हुए थे और जून की अर्ध–वार्षिक क्लोज़िंग आ गई थी। जब मैंने शाखा ज्वाइन की, मेरी शाखा कुछ आयामों में निगेटिव थी। मैंने 15 दिनों तक भरसक प्रयास किया और शायद एक दिन भी ऑफिस में नहीं बैठा। जैसे–तैसे शाखा को निगेटिविटी से बाहर ले आया था और कोर पैरामीटर भी लगभग पूरे कर लिए थे। फिर अपनी समीक्षा बैठक में बैठ कर बहुत आरामदायक महसूस कर रहा था।

समीक्षा बैठक में महा प्रबंधक क्रमानुसार सभी शाखाओं की समीक्षा कर रहे थे और साथ ही साथ अगली छमाही का वर्क आउट प्लान भी पूछ रहे थे। सभी शाखाओं के प्रबंधक अपने–अपने अनुसार कमिटमेंट्स दे रहे थे। जैसे ही मेरी बारी आई, उन्होंने मुझे जो आयाम पूरे नहीं थे उनका कारण पूछा और अगले महीने तक उन्हें पूरा करने के लिए बाध्य किया... अभी वो कह ही रहे थे कि मेरी शाखा के पर्यवेक्षी कार्यपालक ने कहा कि इनका काम काबिल–ए–तारीफ है। मात्र 10 दिन में ये शाखा को निगेटिविटी से न केवल बाहर लाए बल्कि कोर पैरामीटर्स को भी पूरा किया है... महा प्रबंधक ने मेरे काम की प्रशंसा की और अगली छमाही का प्लॉन पूछा। मैंने सभी प्रबंधकों की तरह कोई कमिटमेंट्स नहीं दी अपितु कहा, As March closing will approach, I will rest in my office. वो मेरे इस उत्तर को शायद समझ नहीं पाये और, I will visit your Branch in March ये कह कर उन्होंने अपनी डायरी के मार्च वाले पन्ने पर कुछ लिख लिया।

समीक्षा बैठक के कुछ दिनों बाद ही मैं अपने द्वारा कही इस बात को पूर्णतया भूल चुका था और अपनी शाखा के दैनंदिन काम में व्यस्त हो गया। काम के चलते कब मार्च क्लोज़िंग आ गई पता ही नहीं चला। मार्च की 25 तारीख थी। शाम 04.00 बजे का समय था और हमारे पूरे स्टाफ में समोसा पार्टी चल रही थी। हम सब बड़े खुशनुमा मूड में थे कि एक गाड़ी हमारी शाखा के सामने आकर रुकी। अचानक महा प्रबंधक साहब मेरे सामने आकर खड़े हो गए। मैं भी अपनी कुर्सी से खड़ा हो गया।

वो कहने लगे कि आपको पता है कि एनुअल क्लोजिंग में मात्र पांच दिन बाकी हैं। सभी शाखाएं अपने पैरामीटर पूरे करने में लगी हैं और यहां ये सब क्या चल रहा है? अचानक मुझे अपनी कहीं बात याद आ गई और मैंने कहा, साहब मैंने तो पहले ही कहा था कि As March closing will approach, I will rest in my office, सर बस वही कर रहा हूं। साहब बोले कि मैंने भी कहा था कि I will visit your Branch in March. तो मैं भी कहे अनुसार आपकी शाखा की परफॉर्मेंस चेक करने आया हूँ। लाओ, दिखाओ अपनी पैरामीटर शीट। उनके कहने मात्र पर पैरामीटर शीट, जो मेरे मेज के दराज़ में सबसे ऊपर पड़ी थी, मैंने निकाल कर उनके सामने रख दी।

शीट देखकर वो कुछ क्षण के लिए बिल्कुल स्तब्ध हो गये और फिर कहने लगे ये सब तुमने कैसे किया। शीट के अनुसार हमारे सभी पैरामीटर स्टाफ सदस्यों के सहयोग से फरवरी अंत तक ही पूरे हो

चुके थे और उस तारीख को हम सभी आयामों से ऊपर थे। मैंने कहा सर, इसका श्रेय मेरे इस मेहनती और को–ऑपरेटिव स्टाफ को जाता है, जिन्होंने हर कदम पर मुझे पूर्ण सहयोग दिया। इनके इसी सहयोग से यह संभव हो पाया है और इसी खुशी में हम आज पार्टी कर रहे थे। हमें अत्यंत प्रसन्नता है कि आप हमारी इस खुशी में शामिल हुए।

महा प्रबंधक कहने लगे, शायद उस समय मैं तुम्हारे कथन को समझ नहीं पाया था, लेकिन आज मैं उसे भली–भांति समझ गया हूं कि समझदार लोग बारिश शुरू होने पर छत की मुरम्मत शुरू नहीं करते। वो तो पहले से ही पक्के इंतज़ाम करके रखते हैं। I really appreciate you and your whole Team and your attitude towards work ... enjoy yourself. ये कह कर वह हमारी शाखा से रवाना हो गये और हमारा स्टाफ फिर से दुगुनी खुशी से पार्टी में व्यस्त हो गया।''

पिता जी का ये वृत्तांत मेरे लिए काफी हद तक शिक्षाप्रद साबित हो रहा है और आज, जबकि मैं भी प्रबंधक बन चुकी हूँ, उनके नक्शे कदम पर चलने का इरादा कर लिया है।

कविता

बोली 'अ' से नहीं 'माँ' से शुरु होती है

बोली 'अ' से नहीं 'माँ' से शुरू होती है ।
क्योंकि सृष्टि की उत्पत्ति ही 'माँ' से होती है ।
दुनिया से जाने के तो रास्ते हैं हज़ार, पर दुनिया में आने का,
एकमात्र रास्ता 'माँ' ही है, शिशु का पहला बोल है 'माँ'।
शिशु का पहला घर, जल, थल और नभ है 'माँ'।
ईश्वर भी अपनी रचना सौंप देता है उसको, क्योंकि
आश्रय का पर्याय है 'माँ' ।
दो लोकों का सेतु है 'माँ', निराकार प्रभु का साकार रूप है 'माँ' ।
अपनी हस्ती को भी भूलकर पोषण करती है वह,
ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण है 'माँ' ।
चाहे जितनी कविता या कहानी लिख लो, 'माँ' की महिमा पूरी नही होती है,
क्योंकि बोली 'अ' से नहीं, 'माँ' से शुरू होती है ।

मनजीत कौर
एकल खिड़की परिचालक
चंडीगढ़ सेक्टर–32 शाखा

अंचल समाचार

अहमदाबाद

दिनांक 24.09.2021 को महा प्रबंधक श्री प्रणव रंजन देव के संरक्षण में एवं श्री सुधांशु शेखर साहू, सहायक महा प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत के नेतृत्व में वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त

मंत्रालय द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत का राजभाषा कार्यान्वयन संबंधित निरीक्षण सफलतापूर्वक एवं सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय के उप सचिव श्री संजयकुमार एवं श्री भीम सिंह, उप निदेशक (राजभाषा) ने संयुक्त रूप से क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत का निरीक्षण किया। इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत के प्रांगण में एक भव्य 'राजभाषा प्रदर्शनी' भी लगाई गई।

भोपाल

दिनांक 21.08.2021 को प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एल वी प्रभाकर ने भोपाल अंचल कार्यालय

के नए परिसर का वर्चुअल माध्यम से उद्घाटन किया। इस अवसर पर प्रधान कार्यालय के सभी कार्यपालक निदेशक, मुख्य महा प्रबंधक और अन्य कार्यपालक प्रधान कार्यालय में और अंचल कार्यालय के तहत आने वाले सभी क्षेत्रीय कार्यालयों के प्रमुख अंचल कार्यालय, में उपस्थित थे। श्री के जे श्रीकांत, महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय भोपाल ने अंचल के अन्य कार्यपालकों के साथ प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रधान कार्यालय के सभी कार्यपालकों का स्वागत किया।

भुवनेश्वर

दिनांक 14.09.2021 को अंचल प्रमुख श्री बी.एल. मीना की अध्यक्षता में अंचल कार्यालय, भुवनेश्वर में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री

ध्रुव नंद, उप महा निदेशक, दूरदर्शन केंद्र, भुवनेश्वर उपस्थित थे। इस अवसर पर कार्यक्रम में उप महा प्रबंधक श्री जी.एन. मूर्ति, सहायक महा प्रबंधक श्री प्रकाश प्रधान, सहायक महा प्रबंधक श्री के. श्रीनिवास गुप्ता एवं अन्य कार्यपालक, अधिकारी एवं कर्मचारीगण भी उपस्थित रहे। समारोह का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

चंडीगढ़

अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ में दिनांक 15.09.2021 को हिंदी दिवस समारोह–2021 का भव्य आयोजन किया गया।

समारोह की अध्यक्षता श्री बी.पी. जाटव, महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ द्वारा की गई । इस अवसर पर श्री राजेंद्र सिंह राजपूत, सहायक श्रम आयुक्त (केंद्रीय), चंडीगढ़ मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। श्री एच.एम. बसवराज, राजभाषा अनुभाग, मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु विशेष अतिथि के रूप में उपस्थिति रहे। समारोह में अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ के अन्य कार्यपालक एवं अनुभाग प्रमुख उपस्थित थे। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया और राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन हुआ।

बेंगलूरू

दिनांक 14.09.2021 को अंचल कार्यालय, बेंगलूरु में अंचल कार्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय–पूर्व, केंद्रीय, ग्रामीण–1 और ग्रामीण–2 द्वारा संयुक्त रूप से हिन्दी दिवस का भव्य आयोजन किया

गया । कार्यक्रम की अध्यक्षता अंचल कार्यालय के मुख्य महा प्रबंधक श्री देबानंद साहू ने की । इस कार्यक्रम में श्री बी. पार्श्वनाथ, उप महा प्रबंधक, श्री पी.के. मोहंती, उप महा प्रबंधक, अन्य कार्यपालकगण, पुरस्कार विजेता और अन्य स्टाफ–सदस्य उपस्थित थे । कार्यक्रम में 'केनरा बैंक राजभाषा अक्षय योजना' और 'केनरा बैंक राजभाषा पुरस्कार योजना' के तहत उत्कृष्ट कार्य करनेवाले शाखाओं और कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

चेन्नई

दिनांक 27.09.2021 को अंचल कार्यालय, चेन्नई में श्री पी. पलनिसामि, मुख्य महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, चेन्नई की अध्यक्षता में अंचल और क्षेत्रीय कार्यालय, दक्षिण को मिला कर संयुक्त रूप से हिंदी दिवस समारोह 2021 का भव्य आयोजन किया

गया। इस कार्यक्रम में श्री फ्रैंकलिन सेल्वकुमार, महा प्रबंधक, श्री एम.एस. अवुडियप्पन, उप महा प्रबंधक, श्री के. शण्मुगम, उप महा प्रबंधक, श्री आई. जगदीशन, उप महा प्रबंधक और श्रीमती विमला विजय भास्कर, उप महा प्रबंधक के साथ अंचल और चेन्नई दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय के अन्य कार्यपालक और अनुभाग प्रभारी भी उपस्थित थे।

दिल्ली

दिनांक 17.09.2021 को अंचल कार्यालय, दिल्ली व क्षेत्रीय कार्यालय, मध्य दिल्ली के संयुक्त हिंदी दिवस समारोह का

आयोजन किया गया । कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री एम. परमशिवम, अंचल प्रमुख व मुख्य महा प्रबंधक द्वारा की गई । इस अवसर पर श्री अभय कुमार, महा प्रबंधक, श्री परमानंद शर्मा, उप महा प्रबंधक, श्री रजनीकांत, उप महा प्रबंधक, श्री पी.वी. गोपालकृष्णा, उप महा प्रबंधक और श्री रंजीव कुमार, उप महा प्रबंधक सहित सभी कार्यपालकगण व कर्मचारीगण और शाखाओं से आए सदस्य उपस्थित थे और उत्साह के साथ समारोह में प्रतिभागिता की।

गुवाहाटी

दिनांक 23.09.2021 को केनरा बैंक के माननीय प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एल.वी. प्रभाकर ने गुवाहाटी अंचल का दौरा किया। श्री शेख़ नज़ीर अहमद, अंचल प्रमुख व महा प्रबंधक ने प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी

अधिकारी का स्वागत किया। माननीय प्रबंध निदेशक महोदय ने अंचल के कर्मचारियों के साथ बातचीत के दौरान व्यावसायिक पहलुओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा की तथा सबका मार्गदर्शन किया। उन्होंने सभी से अपनी समस्याओं को साझा करने को कहा और उनकी समस्याओं का समाधान भी सुझाया। इस अवसर पर अंचल कार्यलय के अंतर्गत आने वाले समस्त क्षेत्रीय कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख व अंचल कार्यालय के समस्त अनुभाग प्रमुख और सभी शाखाओं के शाखा प्रभारी उपस्थित रहे।

हुब्बल्ली

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय हुब्बल्ली द्वारा दिनांक 14.09.2021 को अंचल कार्यालय परिसर में हिंदी दिवस समारोह

कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंचल प्रमुख श्री जी.एस. रविसुधाकर, महा प्रबंधक द्वारा की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. संगमेश नन्नवर, अध्यापक, केंद्रीय विद्यालय उपस्थित रहे। इस दौरान राजभाषा कक्ष द्वारा अंचल स्तर पर आयोजित कुल 04 प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया।

हैदराबाद

दिनांक 18.09.2021 को अंचल कार्यालय, हैदराबाद के सभागृह में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। श्री के.एच. पटनायक, मुख्य महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, हैदराबाद समारोह के अध्यक्ष रहे । डॉ. नरेश बाला, उप निदेशक,

हिंदी शिक्षण योजना, भारत सरकार समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। इस दौरान 'केनरा बैंक राजभाषा अक्षय योजना' व 'केनरा बैंक राजभाषा पुरस्कार योजना' के विजेताओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में अंचल कार्यालय के सभी कार्यपालक व कर्मचारी मौज़ूद थे।

जयपुर

अंचल कार्यालय, जयपुर द्वारा दिनांक 23.09.2021 को श्री पुरुषोत्तम चंद, महा प्रबंधक व अंचल प्रबंधक की अध्यक्षता में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य

अतिथि के रूप में कविवर श्री बनज कुमार 'बनज' उपस्थित थे। कार्यक्रम में 'केनरा बैंक राजभाषा अक्षय योजना' और 'केनरा बैंक राजभाषा पुरस्कार योजना' के तहत उत्कृष्ट कार्य करने वाली शाखाओं और कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर कार्यालय के सभी कार्यपालक और कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

करनाल

दिनांक 14.07.2021 को श्रीमती सी.एस. विजयलक्ष्मी, महा प्रबंधक और अंचल प्रमुख, करनाल अंचल कार्यालय ने नवनिर्मित एमएसएमई सुलभ का उद्घाटन किया। इस अवसर पर अंचल कार्यालय के श्री नेत्र मोहन पात्र, उप महा प्रबंधक, श्री रविश

कुमार सिन्हा, सहायक महा प्रबंधक और क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल के क्षेत्रीय प्रमुख श्री धीरेंद्र मिश्र उपस्थित रहे।

मंगलूरू

दिनांक 14.09.2021 को अंचल कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूरु में संयुक्त रूप से हिन्दी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया। उक्त समारोह में श्रीमती अक्षता शेणै,

प्रधानाचार्य, केनरा सीबीएसी विद्यालय को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया । श्री बी. योगीश आचार्य, अंचल प्रमुख एवं महा प्रबन्धक के साथ श्री के. राघव नाइक, उप महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, श्री रोबर्ट डी. सिल्वा, सहायक महा प्रबंधक और अन्य स्टाफ–सदस्य उपस्थित थे । कार्यक्रम में 'केनरा बैंक राजभाषा अक्षय योजना' और 'केनरा बैंक राजभाषा पुरस्कार योजना' के तहत उत्कृष्ट कार्य करने वाली शाखाओं और कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

लखनऊ

दिनांक 18.09.2021 को अंचल कार्यालय, लखनऊ तथा क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ– I व II ने संयुक्त रूप से हिंदी दिवस

समारोह का आयोजन किया । समारोह की अध्यक्षता अंचल प्रमुख व महा प्रबंधक श्री शम्भू लाल द्वारा की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की प्रोफेसर डॉ. अलका पाण्डेय उपस्थित रहीं। समारोह में अंचल तथा क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ –I व II के समस्त कार्यपालकगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे ।

मणिपाल

दिनांक 15.08.2021 को अंचल कार्यालय, मणिपाल में 75वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाया गया। अंचल कार्यालय के उप महा प्रबंधक श्री प्रदीपा आर. भक्ता, सीपीसीएफटी के सहायक महा

प्रबंधक श्रीमती मिनि के. और सीजीटीएमएसई वर्टिकल के मंडल प्रबंधक श्री राजेश कारू की उपस्थिति में श्री रामा नायक, महा प्रबंधक व अंचल प्रबंधक ने झंडा फहराया और स्वतंत्रता दिवस का संदेश दिया। अंचल कार्यालय के सभी कार्यपालकों ने उपस्थितजनों को संबोधित किया। अंचल कार्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय एवं स्थानीय शाखाओं के कर्मचारियों ने समारोह में भाग लिया।

मुम्बई

दिनांक 14.09.2021 को अंचल कार्यालय, मुम्बई में अंचल कार्यालय, मुम्बई, क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई –दक्षिण, क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई –उत्तर व क्षेत्रीय कार्यालय– ठाणे द्वारा संयुक्त रूप से हिंदी दिवस समारोह का आयोजन धूमधाम से किया गया। समारोह की अध्यक्षता अंचल कार्यालय के मुख्य महा प्रबंधक व अंचल प्रमुख श्री पी. संतोष द्वारा की गई । मुम्बई विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय मुख्य अतिथि रहे। समारोह में 'केनरा बैंक राजभाषा अक्षय योजना', 'केनरा बैंक

राजभाषा पुरस्कार योजना' एवं हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

पटना

दिनांक 13.08.2021 को अंचल कार्यालय, पटना के सभागार में अंचल व क्षेत्रीय कार्यालय, पटना के कर्मचारियों के लिए सरकार द्वारा प्रायोजित 'बचत व बीमा योजनाएँ : महत्ता व कार्यान्वयन' विषय पर हिंदी में परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन

किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री श्रीकांत एम. भन्डिवाड, महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, पटना द्वारा की गई। परिचर्चा कार्यक्रम में उप महा प्रबंधक श्री के.सी. टुडु व श्री शंकर लाल एवं सहायक महा प्रबंधक श्री उपेन्द्र दुबे, मंडल प्रबंधक श्री बी.के. सिंह सहित अंचल कार्यालय पटना व क्षेत्रीय कार्यालय, पटना के अन्य कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

पुणे

दिनांक 18.09.2021 को अंचल कार्यालय, पुणे में हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता अंचल प्रमुख व महा प्रबंधक श्री सुबोध कुमार द्वारा की

गई। कार्यक्रम में अंचल कार्यालय के सभी कार्यपालक व कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

रांची

अंचल कार्यालय, रांची में 15.08.2021 को 75वें स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन हर्ष और उल्लास के साथ किया गया। अंचल प्रमुख व महा प्रबंधक श्री हितेश गोयल ने

ध्वजारोहण किया। केनरा बैंक के सुरक्षाकर्मियों द्वारा राष्ट्रीय सलामी दी गई। इस अवसर पर श्री अजय कुमार, सहायक महा प्रबंधक, श्री संजीव कुमार, सहायक महा प्रबंधक, श्री विजय शंकर झा, सहायक महा प्रबंधक, श्री रामचंद्रा, मंडल प्रबंधक तथा अंचल कार्यालय के कर्मचारीगण उपस्थित थे।

विजयवाडा

दिनांक 14.09.2021 को अंचल कार्यालय, विजयवाडा में श्रीमती के. कल्याणी की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस का भव्य आयोजन किया गया । इस समारोह में डॉ. पेरिसेट्टी श्रीनिवास राव,

वरिष्ठ प्राध्यापक, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, विजयवाडा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे । इसमें श्री मुरलीधर बेहेरा, उप महा प्रबंधक, श्री प्रवीण कुमार सिंह, उप महा प्रबंधक, सहायक महा प्रबंधकगण, मंडल प्रबंधकगण, सभी अनुभाग प्रमुख और अंचल कार्यालय के सभी स्टाफ –सदस्य उपस्थित थे ।

तिरुवनंतपुरम

दिनांक 18.09.2021 को अंचल कार्यालय, तिरुवनंतपुरम में अंचल कार्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम तथा क्षेत्रीय

कार्यालय, तिरुवनंतपुरम–II द्वारा संयुक्त रूप से हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। श्री एस. प्रेमकुमार, महा प्रबंधक ने कार्यक्रम

की अध्यक्षता की। इस अवसर पर श्री राजेश कुमार सिंह, आई ए एस, अपर मुख्य सचिव, केरल सरकार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में अंचल और क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कार्यपालक और कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

आगरा

अंचल कार्यालय, आगरा में दिनांक 01.09.2021 को 'सितंबर माह – हिंदी माह' का शुभारंभ किया गया। हिंदी माह के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को दिनांक 14.09.2021 को संपन्न पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में

प्रधान कार्यालय से विशेष रूप से पधारे कार्यपालक निदेशक श्री के. सत्यनारायण राजू और मुख्य महा प्रबंधक श्री भवेंद्र कुमार के साथ अंचल प्रमुख व महा प्रबंधक श्री एस. वासुदेव शर्मा ने अंचल के सभी कार्यपालकों एवं सभी क्षेत्रीय प्रमुखों की उपस्थिति में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

दिनांक 23.09.2021 को अंचल कार्यालय, आगरा के सम्मेलन कक्ष में हिंदी दिवस समारोह 2021 का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता अंचल प्रमुख व महा प्रबंधक श्री एस. वासुदेव शर्मा ने की। इस अवसर पर अंचल कार्यालय से संजय कुमार सिंह, उप महा प्रबंधक, श्री अजय कुमार वर्मा, उप महा प्रबंधक, श्री आनंद श्रीवास्तव, सहायक महा प्रबंधक के साथ–साथ अन्य कार्यपालक व सभी स्टाफ–सदस्य उपस्थित थे।

मदुरै

दिनांक 17.09.2021 को अंचल कार्यालय, मदुरै में श्री डी. सुरेंद्रन, महा प्रबंधक की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस मनाया गया। इसमें सभी कर्मचारियों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। इस अवसर पर 'केनरा बैंक राजभाषा अक्षय योजना' एवं 'केनरा बैंक

राजभाषा पुरस्कार योजना' के तहत विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। अंचल कार्यालय के सभी कर्मचारियों के लिए विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और विजेताओं तथा सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

केनरा बैंक प्रबंधन संस्थान, मणिपाल

केनरा बैंक प्रबंधन संस्थान, मणिपाल में दिनांक 01.09.2021 से दिनांक 30.09.2021 तक हिंदी माह का भव्य आयोजन किया गया। इस दौरान कार्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताओं

का आयोजन किया गया और विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया। इस अवसर पर सीआईबीएम में कार्यरत सभी स्टाफ सदस्यों ने राजभाषा प्रतिज्ञा ली और हिंदी में हस्ताक्षर भी किए।

कविता

रक्षाबंधन - राखी

आया है राखी का त्यौहार
भाई–बहन का अटूट प्यार!
आरती की थाली, माथे पर तिलक
सूनी कलाई पर बांधी रेशम की डोर!!

वो मेरी प्यारी बहना,
हम सबको यूँ ही प्यार करना!
कभी हंसाती, कभी रुलाती
कभी मां बनकर डांटती,
तो कभी दोस्त बन कर समझाती!
कभी नोक–झोंक तो कभी तकरार है,
कभी झगड़ा तो कभी प्यार है!!

बहन होती है मां का प्रतिरूप,
मां–बाप जैसा फर्ज़ निभाती,
हर सुख–दु:ख में साथ निभाती
हर घड़ी हमारा हौसला बढ़ाती!
भाई–बहन का रिश्ता है अटूट डोर
दीपक की थाली और रेशम की डोर!!

भाई को राखी बांधकर लेती है ये वचन,
हर सुख–दु:ख में साथ निभाना,
बहन की रक्षा करना और उसकी लाज रखना!
बहन का मान–सम्मान बनाए रखना!
घर में बहन की याद संजोए रखना!!

भाई पर भी है बहन का कर्ज
बहन की रक्षा करना है हमारा फर्ज़!
आओ हम सब मिलकर लें ये वचन
बहन को कोई दु:ख आने न पाए,
हर सुख–दु:ख में साथ निभाएँ!
भगवान कृष्ण की तरह राखी का फ़र्ज़ निभाएँ!!

अमित कुमार
परिसर व संपदा विभाग
अंचल कार्यालय पटना

पौराणिक काल की रीत है रक्षाबंधन,
अटूट डोर का प्रतीक है रक्षाबंधन,
भाई–बहन का पवित्र रिश्ता है रक्षाबंधन
रक्षा और प्रेम का अटूट विश्वास है रक्षाबंधन!!

दिनांक 30.07.2021 को श्री सुमीत जैरथ, आई.ए.एस., सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय के दौरे के अवसर पर केनरा बैंक प्रधान कार्यालय द्वारा प्रकाशित केनरा बैंक की त्रैमासिक गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' व नराकास(बैंक), बेंगलूरु की अर्ध-वार्षिक पत्रिका 'प्रयास' का विमोचन करते हुए सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार व केनरा बैंक प्रधान कार्यालय का शीर्ष प्रबंधन

बाएं से दाएं - श्री बृजमोहन शर्मा, कानि, श्री के सत्यनारायण राजू, कानि, श्री सुमीत जैरथ, सचिव, राजभाषा विभाग, श्री एल.वी. प्रभाकर, प्रनि व मुकाअ, श्री देवाशीष मुखर्जी, कानि, सुश्री ए. मणिमेखलै, कानि

केनरा बैंक Canara Bank

भारत सरकार का उपक्रम

A Government of India Undertaking

सिंडिकेट Syndicate

Together We Can

महामारी से हम एक साथ मिलकर लड़ सकते हैं

केनरा जीवन रेखा

स्वास्थ्य सेवा व्यापार ऋण

पंजीकृत अस्पताल/नर्सिंग होम/अन्य निर्माताओं तथा आपूर्तिकर्ताओं को मेडिकल ऑक्सीजन और ऑक्सीजन सिलेंडर, ऑक्सीजन कंसंट्रेटर आदि के निर्माण एवं आपूर्ति के लिए वित्तीय सहायता।

- **ऋण की मात्रा :** ₹ 2 करोड़ तक
- रियायती ब्याज दर
- **शून्य** प्रसंस्करण शुल्क
- **संपार्श्विक प्रतिभूति : एमएसएमई के लिए – शून्य** (सीजीटीएमएसई के तहत प्रावरित, गारंटी प्रीमियम बैंक द्वारा वहन किया जाएगा)
  गैर–एमएसएमई के लिए – न्यूनतम 25%
- **योजना की वैधता: 31.03.2022**

केनरा चिकित्सा

स्वास्थ्य सेवा ऋण सुविधाएं

पंजीकृत अस्पताल / नर्सिंग होम / चिकित्सक / नैदानिक केंद्र / पैथोलॉजी लैब इत्यादि और स्वास्थ्य सेवा ढाँचे के निर्माण / सेवा में लगे पारिस्थितिकी तंत्र की अन्य सभी इकाइयों को वित्तीय सहायता।

- **ऋण की मात्रा:** ₹ 10 लाख से ₹ 50 करोड़ तक
- **चुकौती :**
  - **सावधि ऋण :** 10 वर्ष (18 महीने तक ऋण स्थगन सहित)
  - **कार्यशील पूंजी :** वार्षिक नवीनीकरण सहित एक वर्ष के लिए मान्य
- रियायती ब्याज दर
- **योजना की वैधता:** 31.03.2022

केनरा सुरक्षा

व्यक्तिगत ऋण योजना

कोविड–19 उपचार के लिए ग्राहकों को अस्पताल में भर्ती होने या छुट्टी के बाद तत्काल वित्तीय सहायता (बेजमानती ऋण)

- ऋण की मात्रा : ₹ 25,000 से ₹ 5 लाख
- 6 महीने की स्थगन अवधि
- योजना की वैधता : 30.09.2021
- शून्य प्रसंस्करण शुल्क

*नियम व शर्तें लागू

केनरा संपर्क सूत्र : 1800 425 0018

www.canarabank.com

@canarabank YouTube CanaraBankOfficial canarabank canarabankinsta canarabankofficial LinkedIn canarabank